Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 4

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 47

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

23 रबीउल अव्वल 1441 हिजरी कमरी 21 नबुव्वत 1398 हिजरी शमसी 21 नवम्बर 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

तक़्वा के स्तर और मुर्तबे बहुत हैं लेकिन अगर सच्चा इच्छुक हो कर आरंम्भिक स्तर को दृढ़ता और ख़ुलूस से तय करे तो वह इस सच्चाई और सच्चाई की चाह के कारण से उच्च स्तर को पा लेता है। अल्लाह फ़रमाता है اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ मानो अल्लाह तआला मुत्तक़ियों की दआओं को क़बूल फ़रमाता है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

क़बूलीयत दुआ की शराइत

मगर यह बात भी दिल लगा कर सुन लेनी चाहिए कि दुआ के स्वीकार होने के लिए भी कुछ शर्तें होती हैं उनमें से कुछ तो दुआ करने वाले के बारे में होती हैं और कुछ दुआ कराने वाले के बारे में। दुआ कराने वाले के लिए ज़रूरी होता है कि वह अल्लाह तआला के ख़ौफ़ और ख़शीयत को समक्ष रखे और इस के व ज़ाती ग़िना से हर वक़त डरता रहे और सुलह करना और ख़ुदा कई इबादत को अपना निशान बना ले। तक़्वा और सच्चाई से ख़ुदा तआला को ख़ुश करे , तो ऐसी अवस्था में दुआ के लिए स्वीकार करने का दरवाज़ा खोला जाता है। अगर वह ख़ुदा तआला को नाराज़ करता है और इस से बिगाड़ और जंग क़ायम करता है तो इस की शरारतें और ग़लत काम दुआ की रोक और एक चट्टान हो जाती हैं और स्वीकार होने का दरवाज़ा उस के लिए बंद हो जाता है।

हमारी दुआओं को नष्ट होने से बचाएं

अत: हमारे दोस्तों के लिए लाज़िम है कि वे हमारी दआओं को नष्ट होने से बचाएं और उनकी राह में कोई रोक ना डाल दें जो उनकी अनुचति हरकतों से पैदा हो सकती है। उनको चाहिए कि वो तक़्वा की राह धारण करें क्योंकि तक़्वा ही एक ऐसी चीज़ है जिसको शरीयत का सार कह सकते हैं और अगर शरीयत को संक्षिप्त रूप से बयान करना चाहें तो शरीयत का सार तक़्वा ही हो सकता है। तक़्वा के स्तर और मुर्तबे बहुत हैं लेकिन अगर सच्चा इच्छुक हो कर आरंम्भिक स्तर को दृढ़ता और ख़ुलूस से तय करे तो वह इस सच्चाई और सच्चाई की चाह के कारण से उच्च स्तर को पा लेता है। अल्लाह फ़रमाता है اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ मानो अल्लाह तआला मुत्तक़ियों की दआओं को क़बूल फ़रमाता है। यह मानो उस का वादा है और इस के वादों में देरी नहीं होता। जैसा कि फ़रमाया है : اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ (अररॉद :32) अत: जिस हालत में तक़्वा की शर्त क़बूलीयत दुआ के लिए एक अनिवार्य शर्त है , तो एक इन्सान ग़ाफ़िल और रास्ता से हट कर अगर क़बूलीयत दुआ चाहे तो क्या वे मुर्ख और अज्ञान नहीं है। अत: हमारी जमाअत को अनिवार्य है कि जहां तक मुम्किन हो हर एक उनमें से तक़्वा की राहों पर क़दम मारे ताकि क़बूलीयत दुआ का आन्नद और लाभ हासिल करे और ईमान की वृद्धि का हिस्सा ले।

नफ़्स इन्सानी की तीन हालतें

क़ुरआन शरीफ़ से मालूम होता है कि नफ़्स इन्सानी की तीन हालतें हैं। एक अम्मारा, दूसरी लव्वामह, तीसरी मुत्मइन्नह। नफ़्स अम्मारा की हालत में इन्सान शैतान के पंजा में मानो गिरफ़्तार होता है और इस की तरफ़ बहुत झुकता है लेकिन नफ़्स लव्वाम की हालत में वह अपनी भूलूं पर लज्जित होता और शर्मिन्दा हो कर ख़ुदा की तरफ़ झुकता है मगर इस हालत में भी एक जंग रहती है। कभी शैतान की तरफ़ झुकता है और कभी रहमान की तरफ़। मगर नफ़्स मुत्मइन्नह की हालत में वह इबादुर्रहमान के अन्तर्गत दाख़िल हो जाता है और यह मानो इर्तिफ़ाई बिन्दु है जिसके मुक़ाबला में नीचे की तरफ़ अम्मारा है। इस तकड़ी के बीच में लव्वाम है जो तराज़ू की ज़बान की तरह है। पतन के बिन्दु की तरफ़ अगर ज़्यादा झुकता है तो जानवरों से भी बुरा और नीचे हो जाता है और ऊंचाई के बिन्दु की तरफ़ जिस क़दर लौटेगा तो उसी क़दर अल्लाह तआला की तरफ़ क़रीब होता जाता है और निचली और ज़मीना हालतों से निकल कर ऊंचाई और आसमान के फ़ैज़ों से हिस्सा लेता है।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 92 से 93)

☆ ☆ ☆

जलसा सालाना कादियान के बारे में एलान

दिसम्बर 2019 ई में आयोजित होने वाले जलसा सालाना कादियान के बारे में अख़बार बदर कादियान में ऐलान होता रहा है कि यह जलसा 125वां जलसा सालाना है। इस तारीख़ी जलसा के बारे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने कुछ विशेष प्रोग्रामों की मन्ज़ूरी प्रदान फ़रमाई है जिस की सूचना सर्कुलर के द्वारा जमाअतों को दी गई है। इसी दौरान' तारीख़ अहमदियत कादियान विभाग''की तहक़ीक़ की रोशनी में सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल की सेवा में यह सूचना दी गई कि 2019 ई में आयोजित होने वाला जलसा सालाना 125 वां जलसा सालाना नहीं बल्कि126 वां जलसा सालाना है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने शफ़क़त करते हुए इस की मन्ज़ूरी प्रदान फ़रमाई और प्रोग्रामों को भी जारी रखने का आदेश फ़रमाया है। बदर के पाठक सूचित रहें।

(नाज़िर इस्लाहो इरशाद मर्कज़िया कादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ का अमरीका का सफर, अक्तूबर 2018 ई (भाग-16)

जमाअत अहमदिया के लोगों दूसरे मुसलमानों के लिए नमूना हैं। (एक ग़ैर अहमदी मुसलमान दोस्त तारिक़ ख़लील साहिब)

ख़लीफतुल मसीह का ख़िताब बहुत उच्च था, यह ख़िताब सुन कर मेरी आँखें भर आईं , इस पैग़ाम की दुनिया को बहुत ज़रूरत है।

(एक मेहमान Ann Littleसाहिबा)

यह बहुत ही अच्छी जमाअत है, प्रत्येक बहुत अच्छे तरीक़े से मिला है, बहुत दोस्ताना माहौल है।

(एक यहूदी और एक ईसाई औरत Jane Pickren साहिबा और Judy Lawrence साहिबा)

हुज़ूर अनवर का पैग़ाम बहुत प्रभावित करने वाला था, आपका एक एक शब्द मेरी रूह तक असर कर रहा था, हुज़ूर अनवर का पैग़ाम बहुत हिक्मत वाला था। (एक ग़ैर मुस्लिम मेहमान Alex Keiseh साहिब)

मुहब्बत सब के लिए, नफ़रत किसी से नहीं का सच्चा नज़ारा आपकी जमाअत पेश करती है और आज के ख़िताब के बाद में कह सकती हूँ कि ख़लीफतुल मसीह रंग तथा नस्ल के भेदभाव के सिर्फ और सिर्फ अमन चाहते हैं।

(एक मेहमान Sandra Wilson साहिबा जो काओनटी गर्वनमैंट में काम करती हैं)

आज के ख़िताब में हुज़ूर अनवर ने इस्लाम की वास्तविक शक्ल सामने लाकर रखी, और इस का ख़ुलासा अमन तथा इन्साफ और बराबरी का माहौल पैदा करना है।

(एक औरत मेहमान Dr. Kimberly Norman Orosco जो Criminologist और लेखिका हैं।)

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का ख़िताब सुन कर सम्मान्नीय मेहमानों के ईमान वर्धक विचार

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

3 नवंबर2018 ई (दिनांक हफ़्ता)(बाक़ी रिपोर्ट)

ख़िताब सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़

इसके बाद 6 बज कर 12 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने मेहमानों से अंग्रेज़ी भाषा में ख़िताब फ़रमाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के ख़िताब का उर्दू से हिन्दी अनुवाद पेश किया जा रहा है।

हुज़ूर अनवर ने अपने ख़िताब का आरम्भ तशह्हुद ताव्वुज़ से फ़रमाया। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: सारे सम्मान्नीय मेहमानान!

अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह अल्लाह व बरकातहू।

आप सब पर अल्लाह तआला की सलामती और बरकतें हों। इस अवसर पर सबसे पहले तो मों अपने सारे मेहमानों का हमारी दावत क़बूल करने और इस मस्जिद के उद्घाटन में शामिल होने पर शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ। आप लोगों का शुक्रिया अदा करना दरअसल मेरा मज़हबी कर्तव्य है क्योंकि इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा ने यह शिक्षा दी है कि जो इन्सान दूसरे इन्सान का शुक्रगुज़ार नहीं वह ख़ुदा तआला का भी शुक्रगुज़ार नहीं हो सकता।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इस शहर में रहने वाली अधिकतर ग़ैर मुस्लिमों की है और इस इलाक़ा में अहमदियों की संख्या बहुत थोड़ी है लेकिन इसके बावजूद यहां के लोग और काओनटी आ फेशलज़ ने हमें यहां मस्जिद बुनियाद करने की इजाज़त दी है। इस से आप लोगों के विशाल हृदय होने और रवादारी के उच्च स्तर ज़ाहिर होते हैं। और अधिक यह कि आप में से अक्सर मुसलमान नहीं हैं लेकिन इस के बावजूद एक मज़हबी और इस्लामी आयोजन में शामिल हो रहे हैं,यह चीज़ भी आपके खुले दिल वाला होने को बता रहा है और यह आपकी आपसी रवादारी और नेक फ़ितरत की वजह से है कि आप लोग बड़ी कामयाबी से अपने अंदर नई कम्यूनिटीज़ और सोसाइटीज़ को समाहित कर लेते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: हम सब जानते हैं कि इस दौर में इस्लाम को मीडिया में बड़े पैमाना पर नकारात्मक रंग में दिखाया जा रहा है। इस नकारात्मक कवरेज की सबसे बड़ी वजह यह है कि कुछ तथा कथित मुसलमानों की एक थोड़ी संख्या को इंतिहा पसंद बनाया गया है जिन्होंने अपने नफ़रत से भरपूर कर्मों को दरुस्त साबित करने के लिए इस्लाम का नाम प्रयोग करके बहुत घण्डन योग्य तरीक़ धारण किए हैं। इसके नतीजा में अक्सर ग़ैर मुस्लिमों के दिलों में इस्लाम के बारे में शंकाएं और भय जन्म ले चुके हैं। बल्कि लोग दिन प्रतिदिन इस्लाम को समाज के लिए एक ख़तरा समझने लग गए हैं। इन बातों की रोशनी में स्थानीय लोगों का मस्जिद की बुनियाद की इजाज़त दे देना और फिर उस मस्जिद के उद्घाटन की ख़ुशी में शामिल होना इंतिहाई प्रशंसा योग्य कर्म है और मुझे पाबंद करता है कि मैं एक बार फिर आप सब लोगों का दिल की गहराईयों से शुक्रिया अदा करूँ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: में आप लोगों को इस बात का भी यक़ीन दिलाना चाहता हूँ कि मीडिया में जो इस्लाम को नकारात्मक रंग में दिखाया जा रहा है इस का मज़हब की हक़ीक़त से दूर दूर का भी सम्बन्ध नहीं है। कुछ व्यक्तिगत लोग या कुछ गिरोह जो अपनी घिनौनी हरकतों को दरुस्त साबित करने के लिए इस्लाम का नाम प्रयोग करते हैं उनका इस्लाम के साथ कोई भी सम्बन्ध नहीं। इस्लाम तो प्यार, मुहब्बत, अमन , सुलह और भाईचारे की शिक्षा देता है। दरअसल इस्लाम जो कि अरबी शब्द है इस के अर्थ ही अमन के हैं। अत: एक मज़हब जिसका नाम और इस की बुनियाद ही पर अमन स्थापित है इस के लिए यह नामुमकिन है कि वह ऐसी बातों की इजाज़त दे या ऐसी चीज़ों को बढ़ावा दे जिनसे समाज का अमन ख़तरे में पड़ जाए बल्कि ऐसे मज़हब के लिए ज़रूरी है कि वह अमन को बढ़ावा दे और इन्सानियत में प्यार तथा मुहब्बत को फैलाए। निसन्देह क़ुरआन करीम जोकि हमारी पवित्र किताब और इस्लामी शिक्षाओं और इस्लामी क़ानून का सबसे ज़्यादा प्रमाणिक और माध्यम है इस से हमने यही चीज़ें सीखी हैं। शुरू से लेकर आख़िर तक क़ुरआन करीम सिर्फ़ अमन की किताब है जो कि विश्वव्यापी इन्सानी हुक़ूक़ तथा सम्मान को वर्णन करता है। इसकी शिक्षाएं मानव जाति को इन्सानियत के झंडे तले एक साथ करती हैं और प्रत्येक आदमी के हक़ की ज़मानत देती हैं कि वह पूर्ण आज़ादी, इन्साफ़ और न्याय के साथ अपनी ज़िन्दगी गुज़ार सके।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: क़ुरआन करीम में फ़रमाया गया है कि अल्लाह तआला ने सारी क़ौमों में रसूल भेजे ताकि वे इन क़ौमों के अंदर बुनियादी हुक़ूक़ और न्याय तथा इन्साफ़ की इक़दार को स्थापित करें। यह रसूल इसलिए प्रादुर्भव हुए कि इन क़ौमों का अल्लाह तआला के साथ और इस की सृष्टि के साथ सम्बन्ध स्थापित हो और वे मानव जाति को एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा करने की तरफ़ ध्यान दिलाएँ। हम बहैसीयत मुसलमान यह ईमान रखते हैं कि इन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए अल्लाह तआला ने सारी अक़्वाम में रसूल मबऊस फ़रमाए और बड़े बड़े धर्मों की इतिहास साबित करती है कि सारी नबियों अलैहिम अस्सलाम अख़लाक़ीयात और नेकी की उच्च इक़दार पर अनुकरण करने वाले और उनकी तब्लीग़ करने वाले थे। इसलिए इस्लाम की शिक्षाएं तो इन्सानियत को एकता की शिक्षा देती हैं और मज़हब, रंग तथा नस्ल के अन्तरों से ऊंचा होकर आपस में आपसी मुहब्बत और सम्मान के भावना को बढ़ावा देती हैं। इस्लाम एक ऐसा मज़हब है जो कि रुकावटों को गिराता है और अमन वाला और भाईचारा की

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

बदरी सहाबा

''ख़ुदा के नबी की शान से दूर है कि वह हथियार लगा कर फिर उसे उतार दे इस से पहले कि ख़ुदा कोई फ़ैसला करे।''(अलहदीस)

हम अपने धर्म में ग़द्दारी जायज़ नहीं समझते।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने समुरा को भी साथ चलने की इजाज़त फ़रमाई और इस मासूम बच्चे का दिल ख़ुश हो गया।

इख़लास तथा वफ़ा की साक्षात मूर्ति आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बदरी सहाबी हज़रत ख़ुबैब बिन अदी और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उबी बिन सलूल रज़ी अल्लाह अन्हुमा की सीरत मुबारका का दिल-नशीं वर्णन

ख़िलाफ़त के आशिक़, इंतिहाई नेक और शफ़ीक़ ख़ादिम सिलसिला आदरणीय ख़्वाजा रशीदुद्दीन क़मर साहिब की वफ़ात पर उनका ज़िक्र ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 18 अक्तूबर 2019 ई. एगज़ीबिशन सैंटर गीज़न (Giesen) (जर्मनी)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बदरी सहाबा का जो मैंने ज़िक्र शुरू किया हुआ है आज भी वही ज़िक्र करूँगा। पिछले दौरा की वजह से, विभिन्न जलसों की वजह से यह ज़िक्र बीच में टूट गया था, उस का सिलसिला टूट गया था। जो आख़िरी ख़ुत्बा मैंने सहाबा के ज़िक्र पर दिया था वह 20 सितम्बर का था। इस में हज़रत ख़ुबैब बिन अदी रज़ि का ज़िक्र किया गया और इस का कुछ हिस्सा वर्णन करने से रह गया था। इस में वर्णन किया गया था कि उन्होंने शहादत के वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अल्लाह तआला को यह कहा कि मेरा सलाम पहुंचा दे तो बहरहाल यह वे लोग थे जो बड़े उच्च मुक़ाम के थे और अल्लाह तआला का बड़ा क़ुरब हासिल करने वाले थे और अल्लाह तआला का भी उनसे सुलूक का पता लगता है कि जब उन्होंने कहा कि अल्लाह तआला और तो यहां कोई माध्यम नहीं है तू ही मेरा सलाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पहुंचा दे तो फिर वह सलाम अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पहुंचा भी दिया और वहां मज्लिस में बैठे हुए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वअलैकुम अस्सलाम भी कहा और इस का सहाबा रज़ि से ज़िक्र भी किया कि उनकी शहादत हो गई है

(फ़तहुल बारी शरह सही अल-बुख़ारी लिल इमाम इब्न हिज्र असकलानी भाग 7 पृष्ठ 488 किताबुल मग़ाज़ी हदीस नम्बर 4086 क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने, हज़रत ख़ुबैब बिन अदी रज़ि और उनके साथियों की जो शहादत हुई थी उस के बाद हज़रत अमरो बिन अमरो रज़ि को यह हुक्म दिया कि मक्का जाओ और इस ज़ुलम का जो करने वाला है अबूसुफ़ियान उस को क़त्ल कर देना, उस की यह सज़ा है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत जब्बार बिन सख़र अन्सारी रज़ि को भी साथ रवाना फ़रमाया।ये दोनों अपने ऊंट या वादी जो मक्का से आठ मील की दूरी पर स्थित है और इस की यह घाटी थी इस में बांध कर रात के वक़्त मक्का में दाख़िल हुए। हज़रत जबार रज़ि ने हज़रत अमरो रज़ि से कहा कि काश हम तवाफ़ काबा कर सकें और दो रकअत नमाज़ अदा कर सकें अर्थात काअबा में दो रकअत नमाज़ अदा कर सकें। हज़रत अमरो ने कहा कि क़ुरैश का यह तरीक़ है कि रात को खाना खाने के बाद अपने सेहनों में बैठ जाते हैं। कहीं हम पकड़े ना जाएं। हज़रत जबार रज़ि ने कहा इंशा अल्लाह ऐसा हरगिज़ नहीं होगा। हज़रत अमरो रज़ि वर्णन करते हैं कि फिर हम ने तवाफ़ काबा किया और दो रकअत नमाज़ पढ़ी। फिर हम अबू सुफ़ियान की तलाश में निकल पड़े कि अल्लाह क़सम ! हम पैदल चल रहे थे कि मक्का वालों में से एक आदमी ने हमें देखा और मुझे पहचान लिया और कहने लगा कि अमरो बिन उमय्य: यह तो वही है ज़रूर किसी बुराई की नीयत से आया होगा। इस पर मैंने अपने साथी से कहा कि बचोगे,यहां से निकलो। फिर हम तेज़ी से वहां से निकले यहां तक कि एक पहाड़ पर चढ़ गए। वे लोग भी हमारी खोज में निकले। जब हम पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए तो वे मायूस हो कर चले गए। फिर हम नीचे उतर कर पहाड़ की एक ग़ार में घुस गए और पत्थर इकट्ठे कर के ऊपर नीचे रख दिए और वहीं हमने रात गुज़ारी। सुबह हुई तो एक क़ुरैशी इधर आ निकला जो अपने घोड़े को लेकर जा रहा था। हम फिर ग़ार में छिप गए। मैंने कहा अगर उसने हमें देख लिया हुआ तो यह शोर मचाएगा अत: उस को पकड़ कर मार देना ही बेहतर है। हज़रत अमरो रज़ि वर्णन करते हैं कि मेरे पास एक ख़ंजर था जिसे मैंने अबूसुफ़ियान के लिए तैयार किया था। मैंने इस ख़ंजर से इस शख़्स के सीने पर वार किया जिससे वह इस ज़ोर से चीख़ा कि मक्का वालों ने इस की आवाज़ सुन ली। कहते हैं मैं दुबारा अपनी जगह पर आकर छिप गया। जब लोग उस के पास तेज़ी से पहुंचे तो अपनी आख़िरी सांस ले रहा था। उन्होंने इस से पूछा कि तुम पर किस ने हमला किया? उसने कहा कि अमरो बिन उमय्य: ने। फिर मौत ने इस पर ग़लबा पा लिया और इसी जगह वह मर गया और उन्हें हमारी जगह का पता नहीं बता सका।

इस ज़माना में यही हालत थी कि अगर दुश्मनों को पता लग जाता था तो फिर एक दूसरे की सख़्त मुख़ालिफ़त की वजह से यही होता था कि क़तल कर दो और उनको यही शक था कि उसने क्योंकि हमें देख लिया है अब यह जा के बता भी देगा और फिर कुफ़्फ़ार जो हैं वे हमारे पीछे आएँगे और फिर हमें भी क़तल करेंगे तो इस से पहले प्रतिरक्षा के तौर पर उन्होंने यह किया। बहरहाल वे कहते हैं कि वह हमारा पता बता नहीं सका। वे उसे उठा कर ले गए और शाम के वक़्त मैंने अपने साथी से कहा अब हम महफ़ूज़ हैं। अत: हम रात को मक्का से मदीना की तरफ़ निकले तो एक पार्टी के पास से गुज़रे जो हज़रत ख़ुबैब बिन अदी रज़ि की लाश की हिफ़ाज़त कर रही थी। उनमें से एक शख़्स ने हज़रत अमरो रज़ि को देखकर कहा कि ख़ुदा की क़सम जितनी इस शख़्स की चाल अमरो बिन उमय्य: से मिलती है इस से ज़्यादा मैंने आज से पहले कभी नहीं देखी। अगर वह मदीने में ना होता तो मैं कहता कि यही अमरो बिन उमय्य: है। यहां भी अल्लाह तआला ने उनकी आँखों पर पर्दा डाल दिया। कहते हैं कि हज़रत जबार रज़ि जब इस लकड़ी तक जिस पर हज़रत ख़ुबैब

रज़ि को लटकाया गया था वहां तक पहुंचे तो भाग ी से उसे उठा कर चल पड़े। वे लोग भी आपके पीछे भागे। एक दूसरी रिवायत में आता है कि वे लोग शराब के नशे में थे, बदमसत थे ,कुछ जाग रहे थे, कुछ सो रहे थे, कुछ ऊँघ रहे थे तो बहरहाल उनको पता नहीं लगा और ये भाग ी से ले के भागे और फिर उनको भी पता लगा तो आप लोगों के पीछे भागे यहां तक कि जब हज़रत जब्बार माजह पहाड़ के सैलाबी नाले के पास पहुंचे तो उन्होंने इस लक्कड़ी को इस के अंदर फेंक दिया। वे लोग भी पीछे पहुंचे लेकिन अल्लाह तआला ने इस लक्कड़ी को इन काफ़िरों की आँखों से ओझल कर दिया और वे उसे ना ढूंढ सके। हज़रत अमरो रज़ि वर्णन करते हैं कि मैंने अपने साथी अर्थात हज़रत जबार रज़ि से कहा कि तुम यहां से निकलो और अपने ऊंट पर बैठ कर रवाना हो जाओ। मैं इन लोगों को तुम्हारे पीछे आने से रोके रखूँगा।

हज़रत अमरो रज़ि वर्णन करते हैं कि फिर में चला यहां तक कि ज़जहान पहाड़ तक पहुंच गया जो मक्का से पच्चीस मील की दूरी पर स्थित है। मैंने एक ग़ार में पनाह ली

वहां से निकला यहां तक कि मुक़ाम अर्ज पर पहुंचा जो मदीने से 78 मील की दूरी पर स्थित है। फिर चलता गया, कहते हैं कि जब मैं मुक़ाम नक़ीअ पर उतरा जो मदीने से तक़रीबन साठ मील की दूरी पर है तो मुशरिकीन ने क़ुरैश के दो आदमी देखे जिन्हें क़ुरैश ने मदीना में जासूसी के लिए भेजा था। मैंने उन्हें कहा कि हथियार डाल दो। पता तो लग गया है कि तुम जासूसी करने आए हो लेकिन वे ना माने। इस पर वहां लड़ाई शुरू हो गई ,कहते हैं एक को तो मैंने तीर मारा और इस को हलाक कर दिया और दूसरे को क़ैदी बना लिया और फिर उसे बांध कर मदीना आया।

(अस्सीरतुन्नबविय्या ले इब्न हश्शाम पृष्ठ 885-886 बाब बाअस अमरो बिन उमय्य: अलज़मरी ले कताल अबी सुफ़ियान...दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2001 ई)(अल असाब: फ़ी तमीज़िस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 226 ख़ुबैब बिन अदी। दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1995 ई)(लुगातुल हदीस भाग 4 पृष्ठ 603 किताब "य"। भाग 3 पृष्ठ 46 किताब "फ")(मोअजमुल बुलदान भाग 3 पृष्ठ 225 309 भाग 4 पृष्ठ 400)

एक दूसरी रिवायत के अनुसार हज़रत अमरो बिन उमय्य: ज़मुरी वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें तन्हा जासूस के तौर पर भेजा ताकि हज़रत ख़ुबैब रज़ि को लक्कड़ी से आतारुं। वह कहते हैं कि रात के वक़्त में हज़रत ख़ुबैब रज़ि की लक्कड़ी के पास पहुंच कर उस के ऊपर चढ़ गया तो उस वक़्त ख़ौफ़ था कि कोई मुझे देख ना ले। जब मैंने इस लक्कड़ी को छोड़ दिया तो ज़मीन पर गिर पड़ी। फिर मैंने देखा कि वह लक्कड़ी ऐसी ग़ायब हो गई गोया उसे ज़मीन ने निगल लिया। फिर उस वक़्त से लेकर आज तक ख़ुबैब की हड्डियों का कोई ज़िक्र नहीं है

(असदुल ग़ाब: फ़ी मारफ़तुल सहाब: भाग 1पृष्ठ 684 ख़ुबैब बिन अदी,दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003 ई)

एक और रिवायत के अनुसार हज़रत अमरो बिन उमय्य: ज़मुरी वर्णन करते हैं कि जब मैंने हज़रत ख़ुबैब रज़ि को रस्सियों वग़ैरा से आज़ाद कर के नीचे लिटाया तो मैंने अपने पीछे कोई आहट की आवाज़ सुनी। फिर जब दोबारा में सीधा हुआ तो कुछ भी नज़र ना आया और हज़रत ख़ुबैब रज़ि की लाश ग़ायब हो गई थी।

(अल-इस्तेयाब फ़ी माअरफतुल असहाब: भाग 2 पृष्ठ 25 ख़ुबैब बिन अदी'दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2002 ई)

तो पहली रिवायत जो ज़्यादा सही लगती है कि पीछे जब दौड़े तो उन्होंने दरिया में फेंक दिया और दरिया ने इस को बहा लिया या आगे पीछे कर दिया, नदी थी पानी का बहाव था। तो विभिन्न रिवायते आती हैं। बहरहाल इसी नाम से मशहूर हो गए थे कि उनकी लाश ज़मीन में ग़ायब गई।

(अल असाब: फ़ी तमीज़िस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 226 'ख़ुबैब बिन अदी'दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2005 ई)

तो वे कुफ़्फ़ार जो कुछ करना चाहते थे कोई मालूम ना कर सके इस लाश की बे-हुरमती वे नहीं कर सके और अल्लाह तआला ने इस को महफ़ूज़ रखा।

एक रिवायत हज़रत ख़ुबैब बिन अदी रज़ि के क़ैद की घटना के बारे में इस तरह भी है कि माविया,हुजैर अबू इबाहकी आज़ाद की हुई लौंडी थी मक्का में इन ही के घर में हज़रत ख़ुबैब बिन अदी रज़ि क़ैद थे ताकि हुर्मत वाले महीने ख़त्म हों तो उन्हें क़तल किया जा सके। माविया ने बाद में इस्लाम क़बूल कर लिया था और वह अच्छी मुस्लमान साबित हुईं। माविया बाद में यह क़िस्सा वर्णन करती थीं कि अल्लाह तआला की क़सम मैंने हज़रत ख़ुबैब रज़ि से बेहतर किसी को नहीं देखा। मैं उन्हें दरवाज़े के दर्ज़ से देखा करती थी और वह ज़ंजीर में बंधे होते थे और मेरे ज्ञान में सारी धरती पर खाने के लिए अंगूरों का एक दाना भी ना था, इस इलाक़े में कोई अंगूर नहीं था लेकिन हज़रत ख़ुबैब रज़ि के हाथ में आदमी के सिर के बराबर अंगूरों का गुच्छा होता था अर्थात काफ़ी बड़ा गुच्छा होता था जिसमें से वह खाते। वह अल्लाह के रिज़्क़ के सिवा और कुछ ना था। हज़रत ख़ुबैब रज़ि तहज्जुद में क़ुरआन पढ़ते और औरतें वह सुनकर रो देतीं और उन्हें हज़रत ख़ुबैब रज़ि पर रहम आता।

वह बताती हैं कि एक दिन मैंने हज़रत ख़ुबैब रज़ि से पूछा हे ख़ुबैब क्या तुम्हारी कोई ज़रूरत है तो उन्होंने जवाब दिया नहीं। हाँ एक बात है कि मुझे ठंडा पानी पिला दो और मुझे बुतों के नाम पर ज़बह किए जाने वाले से गोश्त ना देना। जो खाना तुम लोग देते हो कभी वह खाना ना देना जो बुतों के नाम पर ज़िबह किया गया हो और तीसरी बात यह कि जब लोग मेरे क़तल का इरादा करें तो मुझे बता देना। फिर जब हुर्मत वाले महीने गुज़र गए और लोगों ने हज़रत ख़ुबैब रज़ि के क़तल पर इत्तिफ़ाक़ कर लिया तो कहती हैं कि मैंने उनके पास जा कर उन्हें यह ख़बर दी। कहती हैं कि अल्लाह की क़सम उन्होंने अपने क़तल किए जाने की कोई पर्वा नहीं की। उन्होंने मुझ से कहा मेरे पास उस्तुरा भेज दो ताकि मैं अपने आपको दरुस्त कर लूं। वह बताती हैं कि मैंने अपने बेटे अबू हुसैन के हाथ उस्तुरा भेजा। यह बेटा जो है कहती हैं वह हक़ीक़ी बेटा ना था बल्कि माविया ने इस की सिर्फ परवरिश की थी, यही लिखा गया है। जब बच्चा चला गया तो फिर कहती हैं मेरे दिल में ख़्याल पैदा हुआ कि अल्लाह की क़सम ख़ुबैब ने अपना इंतिक़ाम पा लिया। अब मेरा बेटा उस के पास है, उस्तुरा उस के हाथ में है और वह तो इंतिक़ाम ले-लेगा। यह मैंने क्या कर दिया मैंने इस बच्चे के हाथ उस्तुरा भेज दिया है। ख़ुबैब इस बच्चे को उस्तरे से क़तल कर देगा और फिर कहेगा कि मर्द के बदले मर्द। रिवायत तो यह आता है कि बच्चा खेलता हुआ उनके पास चला गया उनके हाथ में उस्तुरा था लेकिन एक रिवायत यह इस तरह है जो तफ़सील से है कि बच्चा होश तथा हवास में था और इस काबिल था कि इस के हाथ कोई चीज़ भिजवाई जा सके और वह उन्होंने भिजवाई। तो वह कहती हैं कि जाएगा तो कह देगा कि ठीक है तुम मेरा क़तल कर रहे हो तो मैं भी ये क़तल कर देता हूँ। फिर जब मेरा बेटा उनके पास उस्तुरा लेकर पहुंचा तो उन्होंने वह लेते हुए मज़ा हिन् इस बच्चे को कहा कि तू बड़ा बहादुर है। क्या तुम्हारी माँ को मेरी ग़द्दारी का ख़ौफ़ नहीं आया और तुम्हारे हाथ मेरे पास उस्तुरा भिजवा दिया जबकि तुम लोग मेरे क़तल का इरादा भी कर चुके हो। हज़रत माविया वर्णन करती हैं कि ख़ुबैब की ये बातें मैं सुन रही थी। मैंने कहा ख़ुबैब! मैं अल्लाह की अमान की वजह से तुमसे बे-ख़ौफ़ रही और मैंने तुम्हारे माबूद पर भरोसा कर के इस बच्चे के हाथ तुम्हारे पास उस्तुरा भिजवाया। मैंने वह इसलिए नहीं भिजवाया कि तुम इस से मेरे बेटे को क़तल कर डालो। हज़रत ख़ुबैब ने कहा कि मैं ऐसा नहीं हूँ कि इस को क़तल करूँ। हम अपने धर्म में ग़द्दारी जायज़ नहीं समझते। वह बताती हैं कि फिर मैंने ख़ुबैब को ख़बर दी कि लोग कल सुबह तुम्हें यहां से निकाल कर क़तल करने वाले हैं। फिर यह हुआ कि अगले दिन लोग उन्हें ज़ंजीर में जकड़े हुए तन्ईम , मक्का से मदीने की तरफ़ तीन मील की दूरी पर एक स्थान है वहां ले गए और ख़ुबैब के क़तल का तमाशा देखने के लिए बच्चे, औरतें, ग़ुलाम और मक्का के बहुत सारे लोग वहां पहुंचे और इस रिवायत के अनुसार कोई भी मक्का में ना रहा

जो इंतिक़ाम चाहते थे, जो अपने बड़ों के क़तल का बदला लेना चाहते थे जो जंग में मारे गए थे वे तो अपनी आँखें ठंडी करने के लिए और जिन्होंने इंतिक़ाम नहीं लेना था और जो इस्लाम और मुस्लमानों के विरोधी थे वे मुख़ालिफ़त का इज़हार करने और ख़ुश होने के लिए वहां गए थे कि देखें किस तरह उस को क़तल किया जाता है। फिर जब हज़रत ख़ुबैब को ज़ैद बिन दसना के साथ तन्ईम लेकर पहुंच गए तो मुशरिकीन के हुक्म से एक लंबी लक्कड़ी खोदी गई। फिर जब वे लोग ख़ुबैब को इस लक्कड़ी के पास लेकर पहुंचे, वहां खड़ी की गई तो ख़ुबैब रज़ि बोले क्या मुझे दो रकअत पढ़ने की मोहलत मिल सकती है? लोग बोले कि हाँ। हज़रत ख़ुबैब रज़ि ने दो नफ़ल इख़तिसार के साथ अदा किए और उन्हें लम्बा ना किया। यह उस औरत की रिवायत है

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्न साद भाग 8 पृष्ठ 399'माविया मौला हुजैर दारे अहया अत्तुरास अलअरबी बैरूत 1996 ई)

(सही अल-बुख़ारी किताब उल-जिहाद बाब हल यसास अलर्जल? हदीस3045)

(असदुल ग़ाबह भाग 1 पृष्ठ 683 हाशिया प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003 ई)

इब्न साद के हवाले से जो रिवायत अभी वर्णन हुई है इस के अनुसार माविया जो

थीं हुजैर बिन अबू अहाबिकी की आज़ाद की गई लौंडी थीं जिनके घर में हज़रत ख़ुबैब रज़ि क़ैद किए गए थे।

अल्लामा इब्न अब्दुल बिर के अनुसार हज़रत ख़ुबैब रज़ि उक़बा के घर में क़ैद थे और उक़बा की बीवी उन्हें ख़ुराक मुहय्या करती थीं और खाने के वक़्त वह हज़रत ख़ुबैब को खोल दिया करती थी।

(अल-इस्तेयाब फ़ी माअरफतुल असहाब: भाग 2 पृष्ठ 25 ख़ुबैब बिन अदी'दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2002 ई)

अल्लामा इब्न असीर जज़री लिखते हैं कि हज़रत ख़ुबैब रज़ि पहले सहाबी थे जो अल्लाह तआला के लिए सलीब दिए गए।

(असदुल ग़ाब: फ़ी मारफ़तुल सहाब: भाग 1पृष्ठ 683 ख़ुबैब बिन अदी,दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003 ई)

अर्थात पहले लक्कड़ी खड़ी की गई, ज़मीन पर गाड़ी गई इस पर उनको बांध के फिर शहीद किया गया।

इस क़तल की घटना के बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो लिखते हैं कि "इस तमाशे को देखने वालों में अबू सुफ़ियान रईस मक्का भी था। वह ज़ेद रज़ि की तरफ़ मुतवज्जा हुआ और पूछा कि क्या तुम पसंद नहीं करते कि मुहम्मद तुम्हारी जगह पर हो और तुम अपने घर में आराम से बैठे हो?' (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम)। "ज़ैद ने बड़े ग़ुस्से से जवाब दिया कि अबू सुफ़ियान तुम क्या कहते हो? ख़ुदा की क़सम मेरे लिए मरना इस से बेहतर है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पांव को मदीने की गलियों में एक कांटा भी चुभ जाए। इस फ़िदाईत से अबूसुफ़ियान प्रभावित हुए बिना ना रह सका।' यह जो जवाब था ऐसा था कि अबूसुफ़ियान इस से प्रभावित हुए बग़ैर ना रह सका "और उसने हैरत से ज़ैद की तरफ़ देखा और फ़ौरन ही फिर दबी ज़बान में कहने लगा कि ख़ुदा-गवाह है कि जिस तरह मुहम्मद(सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के साथ मुहम्मद रज़ि के साथी मुहब्बत करते हैं मैंने नहीं देखा कि कोई और आदमी किसी से मुहब्बत करता हो।

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 262 से 263)

यह था सहाबा का आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इशक़ तथा वफ़ा का सम्बन्ध और जान क़ुर्बान कर देने का स्तर भी। फिर अल्लाह तआला का सुलूक भी उनसे क्या था वह भी ज़ाहिर हो गया। उनका अपना स्तर किया था। जब ये उन्होंने कहा कि जब मैं ख़ुदा तआला की राह में मारा जा रहा हूँ तो जिस पहलू में भी गिरों कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि दाएं गिरता हूँ, बाएं गिरता हूँ, आगे गिरता हूँ, पीछे गिरता हूँ। मैं तो ख़ुदा तआला के लिए जान दे रहा हूँ।

(असदुल ग़ाब: फ़ी मारफ़तुल सहाब: भाग 1 पृष्ठ 683 ख़ुबैब बिन अदी,दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003 ई)

एक आरज़ू थी जिसका उन्होंने क़तल किए जाने से पहले इज़हार किया और वह भी यह कि अल्लाह तआला के हुज़ूर सिज्दा कर लूं, दो नफ़ल पढ़ लूं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सलाम पहुंचाने की आरज़ू थी, इच्छा थी तो वह भी अल्लाह तआला ने पूरी कर दी वह भी पहुंचा दिया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इशक़ का यह हाल था कि यह भी गवारा नहीं हुआ कि आपके पांव में कांटा भी चुभ जाए और इस के बदले में मेरी ज़िन्दगी बचे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की किसी हल्की सी तकलीफ़ की भी एहमीयत थी और अपनी जान की कोई पर्वा नहीं थी। तब ही तो ये लोग अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने थे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उबी बिन सलूल अगले सहाबी हैं जिनका ज़िक्र होगा। हज़रत अब्दुल्लाह का सम्बन्ध अन्सार के क़बीला ख़ज़रज की शाख़ बनू औफ़ से था। यह रईसुल मुनाफ़कीन अब्दुल्लाह बिन उबी बिन सलूल के बेटे थे और निहायत ही मुख़लिस और जान क़ुरबान करने वाले और फ़िदाई सहाबी रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि की माता का नाम ख़ौला बिन्त मन्ज़र था।

(अस्सीरतुन्नबविय्या ले इब्न हश्शाम पृष्ठ 468 अलअन्सार वमन माअहुम दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत लबनान 2001ई)

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्न साद भाग 3 पृष्ठ 408 अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह"। दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत लबनान 1990ई)

हज़रत अब्दुल्लाह का नाम जाहलियत के ज़माने में हुबाब था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप का नाम बदल कर अब्दुल्लाह रख दिया और फ़रमाया हुबाब शैतान का नाम है। सलूल अब्दुल्लाह बिन उबी रईसुल मुनाफ़कीन की दादी का नाम था जिसका क़बीला ख़ुज़ाआ से सम्बन्ध था। उबी अपनी माँ की निसबत से मशहूर था। इसलिए अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल कहलाता था। अब्दुल्लाह बिन उबी बिन सलूल अब्बू आमिर राहिब की ख़ाला का बेटा था। अबू आमिर उन लोगों में से था जो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बिअसत का लोगों में ज़िक्र किया करता था कि एक नबी मबऊस होने वाला है और इस नबी पर ईमान लाने का इज़हार करता था और आप के ज़हूर का लोगों से वादा किया करता था कि ज़हूर होने वाला है। अबू आमिर ने जाहिलियत में टाट पहन लिया था, बड़े मोटे कपड़े पहनता था और रहबानीयत धारण कर ली थी। जब अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मबऊस कर दिया तो फिर बजाय उस के कि जो तलक़ीन किया करता था उस के उलट हो गया और हसद में मुब्तला हो गया, हसद करने लगा और उसने बग़ावत की और अपने कुफ़्र पर क़ायम रहा। मुशरिकीन के साथ बदर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जंग के लिए निकला तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस का नाम फासिक रखा।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्न साद भाग 3 पृष्ठ 408-409 अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह"। दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत लबनान 1990 ई)

हज़रत अब्दुल्लाह की औलाद में उबादा , जलीहा, ख़ेसमा और खौला और अमामा का ज़िक्र मिलता है। हज़रत अब्दुल्लाह इस्लाम लाए और उनका इस्लाम बहुत अच्छा था। ये जलीलुल क़दर सहाबा में शामिल थे। हज़रत अब्दुल्लाह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जंग बदर, उहद और अन्य समस्त जंगों में शामिल हुए। हज़रत अब्दुल्लाह लिखना पढ़ना भी जानते थे। हज़रत आयशा रज़ि ने हज़रत अब्दुल्लाह से हादीसें रिवायत की हैं। हज़रत अब्दुल्लाह को कातिब वह्य होने का भी सौभाग्य हासिल था

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्न साद भाग 3 पृष्ठ 9 अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह "। दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत लबनान 1990 ई)

(सैरुस्सहाब: लेखक सईद अन्सारी भाग 3 पृष्ठ 425 दारुल इशाअत उर्दू बाज़ार कराची 2004ई)

एक रिवायत में आता है कि जंग उहद में हज़रत अब्दुल्लाह का नाक कट गया जिस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें सोने का नाक लगवाने का इरशाद फ़रमाया जबकि एक दूसरी रिवायत में आता है कि उहद उहद के मौक़े पर हज़रत अब्दुल्लाह के दो दाँत टूट गए थे जिस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें सोने के दाँत लगवाने का इरशाद फ़रमाया था। रावी कहते हैं कि दाँत वाली रिवायत ज़्यादा मशहूर है और ठीक है।

(असदुल ग़ाब: फ़ी मारफ़तुल सहाब: भाग 3 पृष्ठ 9 अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत लबनान 2008 ई)

और यही दरुस्त लगती है। कई बार वर्णन करने अतिश्योक्ति कर लेते हैं या कई बार सही पैग़ाम आगे नहीं समझ सकते तो नाक की बात तो नहीं दाँतों की बात ही सही लगती है कि दाँत टूट गए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सोने के दाँत लगवा लो और वही लगवाया करते थे, उस ज़माने में कराऊँन (crown)चढ़ाया करते थे।

जंग उहद में अबूसुफ़ियान ने मुस्लमानों को चैलेंज दिया था कि अगले साल हम दुबारा बदर के मैदान में मिलेंगे। इस वाक़े का ज़िक्र करते हुए सीरत ख़ातिम अलंबीयन में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहबओ ने विभिन्न तवारीख़ से ले के जो नतीजा निकाला है वो है कि

जंग उहद के बाद मैदान से लोटते हुए अबूसुफ़ियान ने मुस्लमानों को यह चैलेंज दिया था कि अगले साल बदर के स्थान पर हमारी तुम्हारी जंग होगी और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस चैलेंज को क़बूल करने का ऐलान फ़रमाया था। इसलिए दूसरे अर्थात 4 हिज्री में जब शवाल के महीने का आख़िर आया तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम डेढ़ हज़ार सहाबा की जमईयत को साथ ले कर मदीने से निकले और आपने अपने पीछे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल को अमीर मुक़र्रर फ़रमाया। हज़रत अब्दुल्लाह को मदीने का अमीर मुक़र्रर फ़रमाया जब आप लश्कर लेकर निकले। दूसरी तरफ़ अबूसुफ़ियान बिन हर्ब भी दो हज़ार क़ुरैश के लश्कर के साथ मक्का से निकला मगर बावजूद उहद की फ़तह और इतने बड़े लशकर के साथ होने के इस का दिल भयभीत था और इस्लाम की तबाही के चाहने के बावजूद वह चाहता था कि जब तक बहुत ज़्यादा ताकत का इंतिज़ाम ना हो जाएगा वह मुसलमानों के सामने ना हो। अत: अभी वह मक्का में ही

था कि उसने नईम नामी एक आदमी को जो एक ग़ैर जानिबदार क़बीले से सम्बन्ध रखता था मदीना की तरफ़ रवाना कर दिया और उसे ताकीद की कि जिस तरह भी हो मुस्लमानों को डरा धमका कर और झूठ सच बातें बना कर जंग से निकलने से बाज़ रखो। अत: यह आदमी मदीना में आया और क़ुरैश की तैयारी और ताक़त और उन के जोशो ख़रोश के झूटे क़िस्से सुना कर उसने मदीना में एक बेचैनी की हालत पैदा कर दी यहांतक कि कुछ कमज़ोर तबीयत लोग इस जंग में शामिल होने से भयभीत होने लगे लेकिन जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने निकलने की तहरीक फ़रमाई और आप ने अपनी तक़रीर में फ़रमाया कि हम ने कुफ़्फ़ार के चैलेंज को क़बूल करके इस मौक़ा पर निकलने का वादा किया है इसलिए हम इस से तख़ल्लुफ़ नहीं कर सकते, उस के ख़िलाफ़ नहीं चलेंगे चाहे मुझे अकेला जाना पड़े, तुम लोग डर रहे हो, अकेला भी जाना पड़े तो मैं जाऊँगा और दुश्मन के मुक़ाबला पर अकेला सीना तान कर लड़ूगा। लोगों का ख़ौफ़ ये बातें सुनकर जाता रहा और वे बड़े जोश और इख़लास के साथ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ निकलने को तैयार हो गए।

बहरहाल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम डेढ़ हज़ार सहाबा के साथ मदीने से रवाना हुए और दूसरी तरफ़ अबूसुफ़ियान अपने दो हज़ार सिपाहीयों के साथ मक्का से निकला लेकिन ख़ुदाई तसर्रुफ़ कुछ ऐसा हुआ कि मुस्लमान तो बदर में अपने वादा पर पहुंच गए मगर क़ुरैश का लश्कर थोड़ी दूर आगे जा कर फिर मक्का लौट गया और इस का क़िस्सा यूं हुआ, किस तरह वह लौटा कि जब अबूसुफ़ियान को नईम की नाकामी का ज्ञान हुआ, मुस्लमानों को डराने के लिए जो आदमी भेजा था जब यह पता लग गया कि मुस्लमान तो नहीं डरे, वो तो बाहर आ गए हैं तो वह दिल में भयभीत हुआ और अपने लश्कर को यह नसीहत करता हुआ रास्ते से लौटा कर वापस ले गया कि इस साल अकाल बहुत ज़्यादा है और लोगों को तंगी है इसलिए इस वक़्त लड़ना ठीक नहीं है। जब सुविधा होगी, हालात ठीक होंगे तो ज़्यादा तैयारी के साथ मदीना पर हमला करेंगे।

बहरहाल इस्लामी लश्कर आठ दिन तक बदर में ठहरा और चूँकि वहां उस जगह, इस मैदान में ज़िलकअदा का महीना के शुरू में हर साल मेला लगा करता था तो इन दिनों में बहुत से सहाबियों ने इस मेला में व्यापार करके लाभ कमाया। कहा जाता है कि यहां तक कि उन्होंने इस आठ दिन के व्यापार में अपने मूल माल को दोगुना कर लिया। जो उनका अपना सरमाया था इस व्यापार की वजह से वह दोगुना हो गया जब मेले का समापन हो गया और लश्कर क़ुरैश ना आया तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बदर से कूच करके मदीना वापिस तशरीफ़ ले आए और क़ुरैश ने मक्का में वापिस पहुंच कर दुबारा मदीने पर हमले की तैयारीयां शुरू कर दीं। यह जो जंग है यह जंग बदरुल मौऊद कहलाती है जिसके लिए यह लश्कर निकला था।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुन्निबय्यीन लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि पृष्ठ 529-530)

हज़रत अब्दुल्लाह12 हिज्री में हज़रत अबू बकर रज़ि की ख़िलाफ़त में जंग यमामा में शहीद हुए थे।

(अल-इस्तेयाब फ़ी माअरफतुल असहाब: भाग 3 पृष्ठ 72 अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह अन्सारी दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2010 ई)

सही बुख़ारी में हज़रत अब्दुल्लाह के पिता अब्दुल्लाह बिन उबी बिन सलूल के बारे में एक रिवायत है। यह रिवायतें भी मैं कई इसलिए वर्णन कर देता हूँ ताकि तारीख़ का भी पता लगता रहे जो सीधा सम्पर्क ना भी हो।

हज़रत उसामा बिन ज़ेद रज़ि से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक गधे पर सवार हुए जिस पर फ़िदक की बनी हुई चादर डाली हुई थी और आप ने हज़रत उसामा बिन ज़ेद रज़ि को अपने पीछे बिठा लिया। आप हज़रत साद बिन अबादह रज़ि की इयादत को जा रहे थे जो बनू हारिस बिन ख़ज़रज के मुहल्ले में रहते थे। यह डंटना जंग बदर से पहले की है। हज़रत उसामह रज़ि कहते थे कि चलते चलते आप एक ऐसी मज्लिस के पास से गुज़रे जिसमें अब्दुल्लाह बिन उबी बिन सलूल था और यह उस वक़्त की घटना है कि अब्दुल्लाह बिन उबी अभी मुस्लमान नहीं हुआ था, जो मुनाफ़िक़ाना इस्लाम लाया था वह भी अभी नहीं था। इस मज्लिस में कुछ मुशरिक भी बैठे थे और कुछ यहूदी भी थे, कुछ मुस्लमान बैठे हुए थे। सब मिलेजुले लोग थे। मज्लिस में हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहह रज़ि भी थे। जब इस जानवर की गर्द मज्लिस पर पड़ी तो अब्दुल्लाह बिन उबी ने अपनी चादर से अपनी नाक ढाँकी और कहने लगा शायद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मुख़ातिब कर के यह कहा कि हम पर गर्द ना उड़ाओ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सलाम कहने के बाद ठहरे और जानवर से उतरे। आप ने उन्हें अल्लाह की तरफ़ बुलाया और उन्हें क़ुरआन पढ़ कर सुनाया। अब्दुल्लाह बिन उबी बिन सलूल ने कहा हे शख़्स! जो बात तुम कहते हो इस से अच्छी कोई और बात नहीं। ठीक है तुम कहते हो या ये अर्थ था कि तुम्हारे नज़दीक इस से अच्छी कोई और बात नहीं या कोई और अच्छी बात नहीं तुम कह सकते? कई मतलब उस के हो सकते हैं। बहरहाल अनुवाद करने में किस तरह किया गया है यह तो असल हवाले से पता लग सकता है। बहरहाल उसने यह कहा अगर यह सच है कि तुम्हारी इस बात से कोई अच्छी बात नहीं तो हमारी मज्लिस में आकर इस से तकलीफ़ ना दिया करो, अपने ठिकाने पर ही वापस जाओ और फिर जो तुम्हारे पास आए इस से वर्णन किया करो। हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहह रज़ि ने यह सुनकर कहा कि नहीं या अल्लाह ! हमारी इन मज्लिसों ही में आप आकर हमें पढ़ कर सुनाया करें। हमें तो यह बात पसंद है। इस पर मुस्लमान और मुशरिक और यहूदी एक दूसरे को बुरा-भला कहने लगे। क़रीब था कि वह एक दूसरे पर हमला करते मगर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन का जोश दबाया, दबाते रहे और समझाते रहे। आख़िर वे रुक गए। फिर उस के बाद नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने जानवर पर सवार हो कर चले गए यहां तक कि हज़रत साद बिन अबादह रज़ि के पास आए। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे कहा कि साद! क्या तुमने नहीं सुना जो अबू हुबाब ने आज मुझे कहा है? आप की मुराद अब्दुल्लाह बिन उबी से थी। आप ने फ़रमाया उसने मुझे यूं यूं कहा है, सारी बात बताई। हज़रत साद बिन अबादह रज़ि ने कहा या रसूलुल्लाह !आप उस को माफ़ कर दें और इस से दरगुज़र कीजिए। इस ज़ात की क़सम है जिसने आप पर किताब नाज़िल फ़रमाई है अल्लाह तआला अब वह हक़ यहां ले आया है जिसको उसने आप पर नाज़िल किया है। इस बस्ती वालों ने तो यह फ़ैसला किया था कि इस अर्थात अब्दुल्लाह बिन उबी को सरदारी का ताज पहना कर इमामा उस के सिर पर बांधें। जब अल्लाह तआला ने इस हक़ की वजह से जो अल्लाह तआला ने आप को प्रदान किया है यह मंज़ूर ना किया तो वह हसद की आग में जल गया। इसलिए उसने वो कुछ कहा जो आप ने देखा। यह सुनकर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस से दरगुज़र किया और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के सहाबा मुशरिकों और अहले किताब से जैसा कि अल्लाह तआला ने उन्हें हुक्म दिया दरगुज़र किया करते थे और उनके तकलीफ पहुंचान पर, तकलीफों पर सब्र किया करते थे। महान अल्लाह तआला ने कहा है कि

وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا أَذًى كَثِيرًا

(आले इमरान187)और तुम ज़रूर उन लोगों से जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई और उनसे जिन्होंने शिर्क किया बहुत तकलीफ़ वाली बातें सुनोगे और अल्लाह तआला ने फिर फ़रमाया कि

وَدَّ كَثِيرٌ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يَرُدُّونَكُمْ مِنْ بَعْدِ إِيمَانِكُمْ كُفَّارًا حَسَدًا مِنْ عِنْدِ أَنْفُسِهِمْ

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

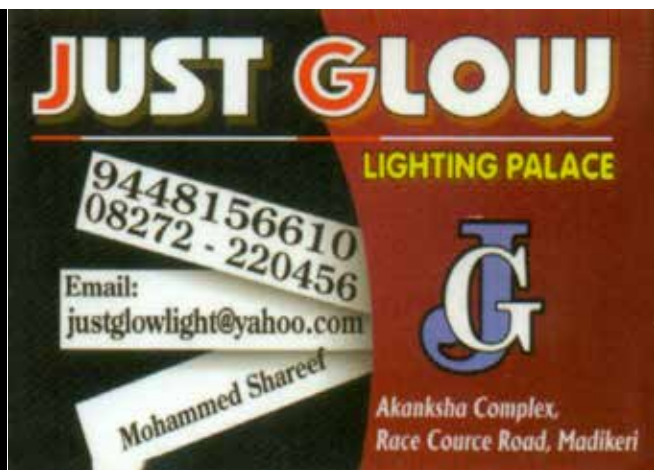

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

(अल-बकर110)अहले किताब में से बहुत से ऐसे हैं जो चाहते हैं कि काश तुम्हें तुम्हारे ईमान लाने के बाद एक बार फिर कुफ्पार बना दें इस कारण से जो हसद के जो उनके अपने दिलों से पैदा होता है। अत: तुम इस वक़्त तक कि अल्लाह अपने हुक्म को नाज़िल फ़रमाए उन्हें माफ़ करो और उनसे दरगुज़र करो और अल्लाह यक़ीनन हर एक बात पर पूरा पूरा क़ादिर है

और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भमा को ही मुनासिब समझते थे जैसा कि अल्लाह तआला ने आप को हुक्म दिया था। आख़िर अल्लाह तआला ने उनको इजाज़त दे दी जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बदर के स्थान पर उनका मुक़ाबला किया और अल्लाह तआला ने इस लड़ाई में कुफ़्फ़ार क़ुरैश के बड़े बड़े सरगर्म मार डाले तो अब्दुल्लाह बिन उबी बिन सलूल और जो उस के साथ मुशरिक और बुतपरस्त थे कहने लगे अब तो यह सिलसिला शानदार हो गया है। उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इस्लाम पर क़ायम रहने की बैअत कर ली और मुस्लमान हो गए।

(सही बुख़ारी किताबुल तफ़सीर ...हदीस नम्बर 4566)

इस्लाम भी उनका इसी तरह था कि जब देखा कि जंग बदर में कामयाब हो गए हैं तो ख़ौफ़ पैदा हुआ और इस्लाम ले आए।

तो बहरहाल ये रिवायतें जैसा कि मैंने कहा उनका सीधा सम्बन्ध नहीं भी है तो वर्णन करता हूँ ताकि इस हवाले से तारीख़ का भी पता लगता चला जाए। फिर उस अब्दुल्लाह बिन उबी बिन सलूल के किरदार की तफ़सील हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने वर्णन की है।

जंग उहद के अवसर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुस्लमानों को जमा कर के उनसे क़ुरैश के इस हमले के बारे में मश्वरा मांगा कि आया मदीने में ही ठहरा जाए या बाहर निकल कर मुक़ाबला किया जाए। इस मश्वरे पर अब्दुल्लाह बिन उबी बिन सलूल भी शरीक था जो दरअसल तो मुनाफ़िक़ था मगर बदर के बाद बज़ाहिर मुसलमान हो चुका था ओर यह पहला मौक़ा था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसे मश्वरे में शिरकत की दावत दी। मश्वरे से पहले आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ुरैश के हमले और उन के ख़ूनी इरादों का ज़िक्र फ़रमाया और फ़रमाया कि आज रात को मैंने ख़वाब में एक गाय देखी है इसी तरह मैंने देखा कि मेरी तलवार का सिर टूट गया है और फिर मैंने देखा कि वह गाय ज़बह की जा रही है और मैंने देखा कि मैंने अपना हाथ एक मज़बूत ढाल के अंदर डाला है। और एक रिवायत में यह भी वर्णन है कि आप ने फ़रमाया कि मैंने देखा है कि एक मेंढा है जिसकी पीठ पर मैं सवार हूँ। सहाबा ने पुछा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप ने इस ख़वाब की क्या ताबीर फ़रमाई है? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि गाय के ज़िबह होने से तो मैं ये समझता हूँ कि मेरे सहाबा में से कुछ का शहीद होना मुराद है और मेरी तलवार के किनारे के टूटने से मेरे अज़ीज़ों में से किसी की शहादत की तरफ़ इशारा मालूम होता है या शायद ख़ुद मुझे इस मुहिम में कोई तकलीफ़ पहुंचे और ज़िरह के अंदर हाथ डालने से में यह समझता हूँ कि इस हमले के मुक़ाबले के लिए हमारा मदीने के अंदर ठहरना ज़्यादा उचित है और मेंढे पर सवार होने वाले ख़्वाब का आपने यह अर्थ फ़रमाया कि इस से कुफ़्फ़ार के लश्कर का सरदार यानी झण्डा उठाने वाला अभिप्राय है, झंडा उठाने वाला जो इंशा अल्लाह मुसलमानों के हाथ से मारा जाएगा।

इस के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा से मश्वरा मांगा कि वर्तमान अवस्था में क्या करना चाहिए। कई बड़े सहाबा रज़ि ने हालात के ऊंच नीच की वजह से और सोच कर और शायद किसी क़दर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़्वाब से प्रभावित हो कर यह राय दी कि मदीने में ही ठहर कर मुक़ाबला करना उचित है। यही राय अब्दुल्लाह बिन उबी बिन सलूल जो रईसुल मुनाफ़कीन था उसने भी दी और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी इसी राय को पसंद फ़रमाया और कहा कि बेहतर यही मालूम होता है कि हम मदीने के अंदर रह कर मुक़ाबला करें लेकिन अक्सर सहाबा ने और विशेष रूप से उन नौजवानों ने जो बदर की जंग में शामिल नहीं हुए थे और अपनी शहादत से धर्म की ख़िदमत का मौक़ा हासिल करना चाहते थे और बड़े बे-ताब हो रहे थे उस के लिए बड़े इसरार के साथ निवेदन किया कि शहर से बाहर निकल कर खुले मैदान में मुक़ाबला करना चाहिए। इन लोगों ने इस क़दर इसरार किया और अपनी राय को पेश किया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके जोश को देख कर उन की बात मान ली और फ़ैसला फ़रमाया कि हम खुले मैदान में निकल कर कुफ़्फ़ार का मुक़ाबला करेंगे और फिर जुमा की नमाज़ के बाद आप ने मुस्लमानों में आम तहरीक फ़रमाई कि वे जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह के लिए से इस जंग में शामिल हो कर सवाब प्राप्त करें।

इस के बाद आप घर के अन्दर तशरीफ़ ले गए, घर चले गए जहां हज़रत अबू बकर रज़ि और हज़रत उमर रज़ि की मदद से आप ने पगड़ी बाँधी और जंगी लिबास पहना और फिर हथियार लगा कर अल्लाह तआला का नाम लेते हुए बाहर तशरीफ़ ले आए लेकिन इतने समय में हज़रत साद बिन माज़ रज़ि रईस कबील ओस और दूसरे बड़े सहाब के समझाने से नौजवान लोगों को अपनी ग़लती महसूस होने लगी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की राय के मुक़ाबले में अपनी राय पर बार बार ज़ोर नहीं करना चाहिए और अक्सर उनमें से लज्जा की तरफ़ झुके हुए थे।

जब उन लोगों ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हथियार लगाए और दुहरी ज़िरह और ढाल इत्यादि पहने हुए देखा कि आप तशरीफ़ लाए हैं तो उन को और भी ज़्यादा लज्जा हो गई और ज़्यादा परेशान हो गए। और उन्हों ने क़रीबन एक ज़बान हो कर निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह हमसे ग़लती हो गई कि हमने आप की राय के मुक़ाबले में अपनी राय पर इसरार किया। आप जिस तरह उचित ख़्याल फ़रमाते हैं इसी तरह कार्रवाई फ़रमाएं। इंशा अल्लाह इसी में बरकत होगी। आप ने बड़े जोश से फ़रमाया कि ख़ुदा के नबी की शान से दूर है कि वह हथियार लगा कर फिर उसे उतार दे इस से पहले कि ख़ुदा कोई फ़ैसला करे। अब यह तो नहीं हो सकता। यह ख़ुदा के नबी की शान नहीं है कि हथियार लगाए और फिर उन्हें उतार दे सिवाए इस के कि अल्लाह तआला का फ़ैसला हो। अत: अब अल्लाह का नाम लेकर चलो और अगर तुम ने सब्र से काम लिया तो यक़ीन रखो कि अल्लाह तआला की सहायता तुम्हारे साथ होगी।

इस के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लश्कर इस्लामी के लिए तीन झंडे तैयार करवाए। क़बीला औस का झंडा उसैद बिन हुज़ैर के सपुर्द किया गया और क़बीला ख़ज़रज का झंडा हुबाब बन मन्ज़र के हाथ में दिया गया और मुहाजिरीन का झंडा हज़रत अली रज़ि को दिया गया और फिर मदीना में अब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम को इमामुस्सलात निर्धारित करके आप सहाबा की बड़ी जमाअत के साथ नमाज़ अस्र के बाद मदीने से निकले। क़बीला औस और ख़ज़रज के रईस साद बिन माज़ रज़ि और साद बिन अबादह रज़ि आप की सवारी के सामने धीरे धीरे दौड़ते जाते थे और बाक़ी सहाबी रज़ि आप के दाएं और बाएं और पीछे चल रहे थे। उहद का पहाड़ मदीने के उत्तर की तरफ़ क़रीबन तीन मील की दूरी पर स्थित है। इस के आधे में पहुंच कर, आधा सफ़र तय कर के इस मुक़ाम पर जिसे शेख़ीन कहते हैं, यह मदीने के क़रीब एक स्थान का नाम है वहां आप ने क़ियाम फ़रमाया और लश्कर इस्लाम का जायज़ा लिए जाने का हुक्म दिया। कम उमर बच्चे जो जिहाद के शौक़ में साथ आ गए थे वे वापस किए गए अत: अब्दुल्लाह बिन उम्र, उसामा बिन ज़ैद, अबू सईद ख़ुदरी इत्यादि सब वापस किए गए। राफ़े बिन ख़दीज उन्हें बच्चों के हम उमर थे मगर तीर अंदाज़ी में अच्छी महारत रखते थे। उनकी इस ख़ूबी की वजह से उनके पिता ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में उनकी सिफ़ारिश

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अत: हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

की कि उनको जिहाद में शामिल होने की इजाज़त दी जाए। आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम ने राफ़े की तरफ़ नज़र उठाकर देखा तो वो सिपाहियों की तरह ख़ूब तन कर खड़े हो गए ताकि चुस्त और लंबे नज़र आएं अत: उनका ये दाव चल गया और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको भी साथ चलने की इजाज़त दे दी। इस पर एक और बच्चा समुरा बिन जनदब जिसे वापसी का हुक्म मिल चुका था अपने बाप के पास गया और कहा कि अगर राफ़े को लिया गया है तो मुझे भी इजाज़त मिलनी चाहिए क्योंकि मैं राफ़े से मज़बूत हूँ और कुश्ती में उसे गिरा लेता हूँ। बाप को बेटे के इस इख़लास पर बड़ी ख़ुशी हुई। उसे साथ लेकर वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अपने बेटे की इच्छा वर्णन की। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुस्कुराते हुए फ़रमाया अच्छा यह बात है तो फिर राफ़े और समुरा की कुशती करवा देते हैं ताकि मालूम हो जाएगा कि कौन ज़्यादा मज़बूत है। अत: मुक़ाबला हुआ और वास्तव में समुरा ने थोड़ी देर में ही राफ़े को उठा कर दे मारा, पछाड़ दिया जिस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने समुरा को भी साथ चलने की इजाज़त प्रदान फ़रमाई और इस मासूम बच्चे का दिल ख़ुश हो गया। अब चूँकि शाम हो चुकी थी इसलिए बिलाल रज़ि ने अज़ान कही और सहाबा ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इक़तिदा में नमाज़ अदा की। फिर रात के लिए मुस्लमानों ने यहीं डेरे डाल दिए और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रात के पहरे के लिए मुहम्मद बिन मुस्लिमा को मुंतज़िम निर्धारित फ़रमाया जिन्हों ने पच्चास सहाबा की जमाअत के साथ रात-भर लश्कर इस्लामी के इर्दगिर्द चक्कर लगाते हुए पहरा दिया।

दूसरे दिन अर्थात15 शवाल 3 हिज्री जो31 मार्च 624 ईसवी बनती है हफ़्ते के दिन सहरी के वक़्त यह इस्लामी लश्कर आगे बढ़ा और रास्ते में नमाज़ अदा करते हुए सुबह होते ही उहद के दामन में पहुंच गया। इस मौक़े पर अब्दुल्लाह बिन उबी बिन सलूल रईसुल मुनाफ़क़ीन ने ग़द्दारी की और अपने तीन सौ साथियों के साथ मुस्लमानों के लश्कर से हट कर यह कहता हुआ मदीने की तरफ़ वापस लौट गया कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरी बात नहीं मानी और ना तजुर्बा कार नौजवानों के कहने में आकर बाहर निकल आए हैं इसलिए मैं उनके साथ हो कर नहीं लड़ सकता। कुछ लोगों ने बतौर ख़ुद उसे समझाया कि यह ग़द्दारी ठीक नहीं है मगर उसने एक नहीं सुनी और यही कहता गया कि यह कोई लड़ाई होती है। अगर लड़ाई होती तो मैं शामिल होता मगर यह लड़ाई नहीं है बल्कि ख़ुद को हलाकत के मुँह में डालना है। अब मुस्लमानों की ताक़त सिर्फ सात सौ लोगों पर आधारित थी जो कुफ़्फ़ार के तीन हज़ार सिपाहियों के मुक़ाबले में चौथाई हिस्से से भी कम थी।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुन्निबय्यीन पृष्ठ 484 से 487)(मुअजमुल बुलदान भाग 3 पृष्ठ 168 ज़ेर श्बद ''शेख़ान''

बहरहाल जंग हुई। इस के हवाले से कुछ और भी हालात हैं बाक़ी इंशा अल्लाह अगले ख़ुत्बे में वर्णन करूँगा।

इस वक़्त अब में एक मरहूम का ज़िक्र भी करना चाहता हूँ जिनका नमाज़ों के बाद मैं जनाज़ा भी पढ़ाऊंगा। वह हैं आदरणीय ख़्वाजा रशीदुद्दीन क़मर साहिब जो मौलाना क़मरुद्दीन साहिब मरहूम के बेटे थे।10 अक्तूबर को कुछ बीमारी के बाद 86 साल की उम्र में अल्लाह तआला के आदेश से वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन।

आप कादियान में1933 ई में पैदा हुए थे और जैसा कि मैंने कहा मौलवी क़म-रुद्दीम साहिब के बेटे थे। मौलवी क़मरुद्दीम साहिब को हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमिदया का पहला सदर निर्धारित फ़रमाया था। मरहूम हज़रत मियां ख़ैरुद्दीन साहिब सेखवानी रज़ी अल्लाह तआला अन्ना के पोते और हमारे मुहतरम अमीर साहिब यूके जो हैं उनके मामूं थे। हज़रत मियां ख़ैरुद्दीन सेखवानी रज़ि और आप के दो भाईयों के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्स-लाम ने अंजाम इथम में लिखा है कि मैं अपनी जमाअत के मुहब्बत और इख़लास पर ताज्जुब करता हूँ कि उनमें से निहायत ही कम आय वाले जैसे मियां जमालुद्दीन और ख़ैरुद्दीन और इमामुद्दीन कश्मीरी मेरे गांव से क़रीब रहने वाले हैं। वे तीनों ग़रीब भाई भी जो शायद तीन आने या चार आने दैनिक मज़दूरी करते हैं लेकिन सरगर्मी से मासिक चंदा में शामिल हैं।

(उद्धरित अन्जाम आथम, रुहानी ख़ज़ाइन भाग 11 पृष्ठ 313)

फिर एक अवसर पर जब आप ने चंदे की तहरीक की तो उन तीनों भाईयों ने चंदे दिए। उनका ज़िक्र करते हुए फ़रमाया कि इन साहिबों के चंदे का मामला निहायत अजीब और गौरव योग्य है कि वे दुनिया के माल से निहायत ही कम हिस्सा रखते हैं मानो हज़रत अबू बकर रज़ी अल्लाह तआला अन्हो की तरह जो कुछ घरों में था वे सब ले आए हैं और धर्म को दुनिया पर मुक़द्दम किया जैसा कि बैअत में शर्त थी।

(उद्धरित मजमूआ इश्तिहारात भाग 3 पृष्ठ 167)

तो ख़्वाजा साहिब उनकी नस्ल में से थे। मरहूम ने पाकिस्तान हिज्रत के बाद कुछ समय पाकिस्तान एयर फ़ोर्स में काम किया।1958 ई में यू के आ गए और यहां33 साल तक ब्रिटिश एयरवेज़ में मुलाज़िम रहे। आप को चूँकि ख़िदमत सिलसिला का भी शौक़ था इसलिए आपने मुलाज़मत के दौरान अपनी डयूटी भी रात के वक़्त रखी ताकि दिन के वक़्त धर्म की ख़िदमत कर सकें। तक़रीबन सारी उम्र सिलसिला की ख़िदमत में गुज़ारी। जमाअत के विभिन्न ओहदों पर फ़ाइज़ रहे। यूके में पहले क़ाइद मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमिदया के तौर पर सात साल तक ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ मिली। इस वक़्त बाहर की ख़ुद्दामुल अहमिदया भी ख़ुद्दामुल अहमिदया मर्कज़िया के अदीन इकट्ठी होती थी तो यूके के पहले क़ाइद यह थे। इस के साथ आपको नैशनल जनरल सैक्रेटरी और फिर सैक्रेटरी माल फिर सैक्रेटरी रिश्ता नाता, सैक्रेटरी उमूरे आमा, नायब अफ़्सर जलसा गाह ख़िदमत करने की तौफीक भी मिली।ला

ख़्वाजा साहिब बेशुमार ख़ूबीयों के मालिक थे। ख़िलाफ़त से बड़ा इशक़ था। बुज़्रगान दीन , मुरब्बियाने किराम और जमाअत के ओहदेदारों का बहुत एहतिराम करते थे। इंतिहाई नेक आदमी थे, तहज्जुद पढ़ने वाले थे। नमाज़ बाजमाअत के पाबन्द, चंदों और सदक़ा ख़ैरात की अदायगी में बाक़ायदा निहायत मिलनसार, ग़रीबों का ध्यान रखने वाले, बच्चों से इंतिहाई शफ़क़त से पेश आने वाले, बड़ों और छोटों का एहतिराम करने वाले बड़े दुआ करने वाले बुज़ुर्ग थे। मरहूम ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से मूसी थे। उनके पीछे रहने वालों में पत्नि के इलावा एक बेटा और दो बेटियां और उनकी एक बहन और तीन भाई हैं।

आपके नवासे क़ासिद मुईन मुरब्बी सिलसिला हैं जो आजकल एम टी ए में भी और अलहकम में भी ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे हैं । क़ासिद मुईन साहिब कहते हैं कि हम हफ़्ता और इतवार के रोज़ अपने नाना के घर में रहते थे। हर हफ़्ते उनको क़रीब से देखने का मौक़ा मिलता। मैं अक्सर बचपन में उनके कमरे में सोता और सोने से पहले हमेशा देखा कि नफ़िल पढ़ कर सोते और नफ़िल निहायत ख़ूबसूरती और तसल्ली और सुकून से पढ़ते और सुबह बाक़ायदगी से तहज्जुद पर उठते और फ़ज्र के लिए हमें भी उठाते। यह लिखते हैं उनको हमेशा बड़ा नर्म-दिल पाया। बड़ा फ़िरिश्ता सिफ़त थे। कभी हमें डाँटा नहीं था। कहते हैं एक बार मुझे उनकी डाँट याद है और वह इस तरह कि मैंने ख़िलाफ़त राबिया मैं बचपन की मासूमियत की वजह से उनसे पूछ लिया कि अगले ख़लीफ़ा कौन होंगे, अगले ख़लीफ़ा के बारे में पूछा। इस पर नाना-जान ने मुझे बड़ा डाँटा और समझाया कि ऐसी बातें नहीं किया करते और छोटी उम्र में ही इस सबक़ से मुझे ख़िलाफ़त के मुक़ाम का अन्दाज़ा हुआ।

बहरहाल ख़िलाफ़त से एक ग़ैरमामूली वफ़ा का ताल्लुक़ था। वह बाक़ायदगी से मुझे भी ख़त लिखा करते थे और आख़िरी बीमारी के दिनों में भी आए, यहां दौरे से पहले ही कुछ दिन पहले मिलने आए। उनको कैंसर की बीमारी का पचा चला और बड़ा तकलीफ़ वाला ईलाज भी है और बीमारी भी लेकिन बड़े सब्र से बर्दाश्त किया और बड़ी हिम्मत से सारी बातें बताएं। अल्लाह तआला उनसे क्षमा और रहम का सुलूक फ़रमाए और अपने प्यारों के क़दमों में जगह दे और उनकी औलाद और उनकी नस्ल को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ फ़रमाए।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 08 नवम्बर 2019 ई पृष्ठ 5 से 9)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

पृष्ठ 2 का शेष

गुफ़्तगु की हौसला अफ़ज़ाई करता है। इसलिए एक सच्चे मुसलमान के बारे में यह सोचा भी नहीं जा सकता कि वह दूसरे धर्मों का विरोध करे और उनके मानने वालों पर अत्याचारों ढाए। इस्लाम ने कभी और कहीं भी शिद्दत पसंदी की शिक्षा नहीं दी और ना ही ज़ुल्म की किसी भी सूरत की हौसला-अफ़ज़ाई की। जब कभी या जहां कहीं भी अगर किसी मुसलमान ने दहश्तगर्दी का हमला किया या किसी किस्म की इंतिहापसंदी या जुनूनीयत का मुज़ाहरा किया तो यह सिर्फ़ इस्लामी शिक्षाओं से दूरी की वजह से किया। इस तरह के लोग या उस किस्म की हरकत सिर्फ और सिर्फ इस्लाम के पवित्र नाम को ख़राब करती हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: क़ुरआन करीम की सबसे पहली सूरत अल- फातिहा में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि वह रब्बुल अलामीन है जो सारे इन्सानों को पालता है। इसका अर्थ है कि वे लोगों के मज़हब और अक़ीदा से ऊंचा होकर सारी मानव जाति को पालता है। ऐसे लोग जो अल्लाह तआला के वजूद का इनकार कर रहे होते हैं या नास्तिक होते हैं वे लोग भी अल्लाह तआला की रहमानियत और रहीमीत से लाभान्वित होते हैं। अत: जहां क़ुरआन करीम अल्लाह तआला को रब्बुल आलमीन क़रार देता है , वहां यह भी बताता है कि अल्लाह तआला रहमान और रहीम है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इसी तरह अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में फ़रमाया कि आप रहमतुन लिल्आलेमीन हैं। निसन्देह इस्लाम के संस्थापक ने अपनी सारी ज़िन्दगी इन्सानियत से बेपनाह मुहब्बत और दया का मुज़ाहरा किया। आप का दिल मुहब्बत और प्यार से मामूर था और आप प्रत्येक समय इन्सानियत की बेहतरी में लगे रहते और हमेशा दूसरों की तकलीफ़ दूर करने की कोशिश करते। आपने अपने अनुयायियों को सारी इन्सानियत की इज़्ज़त तथा सम्मान करने की शिक्षा दी। उदाहरण के तौर पर एक अवसर पर आप तशरीफ़ फ़र्मा थे और क़रीब से एक जनाज़ा गुज़रा तो आप फ़ौरन खड़े हो गए। इस पर आपके एक सहाबी ने निवेदन किया कि यह तो यहूदी का जनाज़ा था ना कि मुसलमान का। इस पर इस्लाम के पैग़ंबर ने फ़रमाया कि क्या वह इन्सान नहीं था? इस से पता चलता है कि आपके दिल में इन्सानियत के लिए कितना सम्मान तथा मुहब्बत थी। इस से यह भी पता चलता है कि आपने किस तरह अपने अनुयायियों को अन्य अक़ीदों और धर्मों के लोगों के साथ हुस्न सुलूक करने की शिक्षा दी कि उन्हें दूसरों की भावनाओं का ख़्याल रखना चाहिए और उनके भावनाओं का सम्मान करना चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: बहुत से लोग यह सवाल करते हैं कि क्या इस्लाम मज़हबी आज़ादी को बढ़ावा देता है? इस सवाल के जवाब में मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुबारक जीवन में से एक और उदाहरण देता हूँ। एक बार नजरान के ईसाईयों का वफ़द आपसे मिलने के लिए मदीना आया। कुछ देर के बाद यह ईसाई मुज़्तरिब होने लग गए। रसूल करीम ने पूछा कि सब ख़ैरीयत है? ईसाईयों ने जवाब दिया कि यह वक़्त उन की इबादत का है लेकिन यहां पर इबादत करने के लिए कोई उचित जगह नहीं है। इस पर रसूल करीम ने ईसाईयों को उन के तरीक़ के अनुसार मदीना में मौजूद अपनी मस्जिद में इबादत के लिए दावत दी। रसूल करीम ने इस महान नमूना के द्वारा सारी इन्सानियत के लिए मज़हबी रवादारी और मज़हबी आज़ादी का स्थायी उदाहरण स्थापित फ़र्मा दिया। लेकिन फिर भी कुछ लोग सवाल करते हैं कि पहले ज़माना के मुसलमानों ने जंगें क्यों लड़ीं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मैं इसकी भी वज़ाहत कर दूं कि जहां कहीं भी इस्लाम ने ताक़त प्रयोग करने की इजाज़त दी वे देशों पर क़ब्ज़ा करने के लिए या लोगों को ज़बरदस्ती इस्लाम क़बूल करवाने के लिए नहीं दी बल्कि क़ुरआन करीम ने जहां पहले ज़माना के मुसलमानों को किसी हद तक ताक़त का प्रयोग करने की इजाज़त दी, वहां बड़ी वज़ाहत के साथ फ़रमाया कि यह इजाज़त अमन तथा सुरक्षा को स्थापित करने के लिए दी गई है और इस बात की यक़ीन दहानी करवाने के लिए दी गई कि वास्तविक मज़हबी आज़ादी का बोल बाला हो। इस से स्पष्ट होता है कि ताक़त के प्रयोग की इजाज़त इस्लाम को बचाने के लिए नहीं बल्कि लोगों के हुक़ूक़ और सारे धर्मों की हिफ़ाज़त के लिए दी गई थी और सारे लोगों के इस हक़ की ज़मानत के लिए दी गई थी कि वे जो चाहें अक़ीदा धारण करें। अत: क़ुरआन करीम की सूरत अल-हज्ज की आयत 41 में जहां पहली बार मुसलमानों को प्रतिरक्षात्मक जंग करने की इजाज़त दी गई वहां इस बात की भी वज़ाहत की गई कि इस्लाम के विरोधी किसी सयासी या क़ौमी या ज़ाती कारणों की वजह से मुसलमानों के ख़िलाफ़ जंग नहीं कर रहे थे बल्कि इस जंग का मुहर्रिक उनकी मज़हब से नफ़रत थी। इस आयत में आता है कि अगर मुसलमानों ने इस वक़्त इस ज़ुलम और नाइंसाफ़ी के ख़िलाफ़ क़दम ना उठाए तो सारे धर्मों का ख़ात्मा हो जाएगा और मज़हबी आज़ादी बिलकुल समाप्त हो जाएगीगी। यह आयत विशेष रूप से ज़िक्र करती है कि अगर उनके हमलों का जवाब ना दिया गया तो यहूद के उपासना स्थल, ईसाईयों के गिरजे, मस्जिद और अन्य इबादत गाहैं महफ़ूज़ नहीं रहेंगी। इसलिए सच तो यह है कि दूसरों पर पाबन्दियां लगाने या दूसरों की मज़हबी आज़ादी को ख़त्म करने की बजाय क़ुरआन करीम अपनी ज़ात में मज़हबी आज़ादी का सबसे पहला कानून है। और अधिक यह कि क़ुरआन करीम मज़हबी आज़ादी को बुनियादी इन्सानी हक़ क़रार देता है इसलिए इस का अर्थ यही बनता है कि वास्तविक मस्जिद मज़हबी आज़ादी की निशानी हैं और आपसी इज़्ज़त तथा सम्मान और प्यार तथा मुहब्बत की रोशन मशअलें हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अत: मैं उम्मीद करता हूँ आपके भूत काल में जो अहमदियों के साथ सम्बन्ध थे उन से आपने प्यार, मुहब्बत और भाईचारा की भावना ही देखा होगा। इसलिए इस मस्जिद की बुनियाद के बाद यह भावना और अधिक बढ़ेगी और हमारी इन्सानियत की सेवा और प्यार तथा मुहब्बत का पैग़ाम पहले से बढ़ कर चारों तरफ गूँजेगा। स्थानीय अहमदी मुसलमान इस मस्जिद के पड़ोसियों के हुक़ूक़ की अदायगी के लिए अपनी कोशिशों में और अधिक इज़ाफ़ा करेंगे। वास्तव में क़ुरआन करीम बार-बार मुसलमानों को ध्यान दिलाता है कि वे अपने पड़ोसियों के हुक़ूक़ अदा करें और उनके साथ कमाल मुहब्बत और दया के साथ पेश आएं। मैं इस बात की भी वज़ाहत कर दूं कि हमारे पड़ोसी सिर्फ वही नहीं जो मस्जिद या अहमदी घरों के आसपास रहते हैं बल्कि क़ुरआन करीम के अनुसार पड़ोसी का दायरा तो इस से कहीं अधिक है और इस पड़ोसी में आपके साथ काम करने वाले, आपके अधीन काम करने वाले, आपके साथ सफ़र करने वाले और इस के अतिरिक्त और भी बहुत से लोग शामिल हैं। सारांक्ष यह कि इस शहर के सारे लोग ही हमारे पड़ोसी बनते हैं और यह हमारा धार्मिक कर्तव्य है कि हम अपने पड़ोसियों के साथ नेक और प्यार और खुले दिल से सुलूक करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मेरी दुआ है कि यहां के स्थानीय अहमदी मेरी बातों के अनुसार अपनी ज़िन्दगियां गुज़ारने वाले हों और हर दिन अपने कथन और कर्म से इस्लाम की मुहब्बत और प्यार के बुनियादी पैग़ाम की वास्तविक अक्कासी करने वाले हों। अल्लाह करे कि अहमदी ना सिर्फ इस इलाक़ा में बल्कि सारे देश में इस्लाम का अमन और ख़ैरख़ाही का पैग़ाम फैलाने वाले हों।अल्लाह करे कि अहमदी अपने पड़ोसियों और समाज के अन्य लोगों के साथ प्यार और हमदर्दी का सुलूक करने वाले हों ताकि कुछ ग़ैर मुस्लिमों के ज़ेहनों में इस्लाम के बारे में जो भी भय और संकाएं हैं वे शीघ्र से शीघ्रतर ख़त्म हो जाएं। मेरी दुआ है कि अहमदी हमारी पवित्र किताब क़ुरआन करीम की उच्च शिक्षाओं पर अनुकरण करने वाले हों ताकि यहां के स्थानीय लोग इस्लाम की हक़ीक़त जान सकें। अल्लाह करे कि हज़रत मुहम्मद जो कि कुरान की शिक्षाओं के पूर्ण मज़हर थे उनका उच्च और नेक नमूना यहां अमरीका में और इस से बाहर भी लोगों पर ज़ाहिर हो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मेरी दिली दुआ है कि स्थानीय , इलाक़ाई, देशीय और विश्वव्यापी सतह पर सारे धर्मों के लोग दुनिया में अमन का पैग़ाम फैलाने की साझे बात पर मुत्तहिद होजाएं। मेरे दिल की गहराई से यह दुआ निकलती है जब हम लोग इस दुनिया से कूच करें तो हमारे बच्चे और हमारी आने वाली नस्लें हमें प्यार और मुहब्बत के साथ याद करें। वे यह कहने वाले हों कि हमारे बुज़ुर्गों ने मानव जाति में प्यार, अमन और भाईचारा को फैलाने और अपने पीछे एक अमन वाला और रोशन दुनिया छोड़ने में कोई कसर बाक़ी नहीं छोड़ी। इस के विपरीत आप निसन्देह यह सहन नहीं कर सकते कि हमारे बच्चे हमें नफ़रत के साथ याद करें कि हम जंग और ख़ूँरेज़ी को फैलाने वाले थे और उनके भविष्य को तबाह करने वाले थे और हमने उन के लिए सिर्फ जंग और तबाही के

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

चिन्ह ही छोड़े हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अत: आने वाली नस्लों की हिफ़ाज़त के लिए यह ज़रूरी है कि हम अपने विपरीत बातों को नजरअंदाज़ करके एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा करने और इन्सानियत की सेवा करने की तरफ़ ध्यान दिलाए। यह हमारी ज़िम्मेदारी है बल्कि हमारा कर्तव्य है कि हम अपने पीछे बाद में आने वालों के लिए ख़ुशहाल और अमन वाली दुनिया छोड़ें। इस को प्राप्त करने के लिए लाज़िम है कि हम अपनी सारी ताक़तें अमन के स्थापना के लिए काम में लाएं। इस्लाम का बुनियादी उसूल यह है कि सारे धर्मों और उनके रहनुमाओं को इज़्ज़त की निगाह से देखा जाए। जैसा कि मैंने आरम्भ में भी कहा था कि हम सारे नबियों पर ईमान लाते हैं इसलिए एक वास्तविक मुसलमान के लिए मुम्किन नहीं है कि वे इन नबियों या उनकी शिक्षाओं के ख़िलाफ़ बातें करे। अत: यह बात इंतिहाई महत्व वाली है कि लोगों के रंग नस्ल और मुक़ाम से हट कर हम एक दूसरे के मज़हब और अक़ीदों का सम्मान करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इन शब्दों के साथ में उम्मीद करता हूँ और दुआ करता हूँ कि अल्लाह तआला हमें इन झगड़ों को ख़त्म करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए जिन्होंने दुनिया को घेर रखा है और हर किस्म की नाइंसाफ़ी और असहिष्णुता को ख़त्म करने में अपनी ज़िम्मेदारियाँ अदा करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। आमीन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मेरी दुआ है कि हम अपने पीछे नफ़रत और ज़ुलम से भरी हुई दुनिया की बजाय एक ऐसी दुनिया छोड़ कर जाएं जो प्यार और मुहब्बत से भरी हो। अपने व्यक्तिगत स्वार्थों के पीछे पड़े रहने की बजाय लोग की सेवा, इन्सानियत की इक़दार को पहचानने वाले हूँ और आख़िर में दुआ करता हूँ कि अल्लाह करे यह मस्जिद इस समाज के लिए मार्ग दर्शन करने वाली और एकता और नई उम्मीद पैदा करने का माध्यम बने। आप सब का एक बार फिर शुक्रिया। अल्लाह तआला आप सब पर फ़ज़ल फ़रमाए। आमीन

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई जिसमें मेहमान अपने अपने तरीक़ा पर शामिल हुए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के ख़िताब के समापन पर मेहमानों ने देर तक तालियाँ बजा कर हुज़ूर अनवर के ख़िताब को सराहा।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने कुछ मेहमानों को तोहफे प्रदान फ़रमाए। इस के बाद डिनर का प्रोग्राम हुआ। खाने के बाद मेहमान बारी बारी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात के लिए आते रहे। हुज़ूर अनवर मेहमानों से गुफ़्तगु फ़रमाते। मेहमान हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीरें बनवाते रहे।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।पौने आठ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद मसरूर में तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद प्रोग्राम के अनुसार यहां से वापस मस्जिद बैयतुर्रहमान वाशिंगटन के लिए रवानगी थी।जमाअत के लोगों मर्द औरतों की बहुत बड़ी संख्या में हुज़ूर अनवर को विदा कहने के लिए मस्जिद के बाहरी सेहन में मौजूद थे। हुज़ूर अनवर मस्जिद से बाहर तशरीफ़ ले आए और कुछ देर के लिए लोगों में रौनक अफ़रोज़ रहे। सभी लोग छोटे बड़े, मर्दो औरत अपने आक़ा की ज़यारत से फ़ैज़याब हो रहे थे। क़दम क़दम पर बच्चे बच्चियां, औरत हुज़ूर अनवर की तस्वीरें बना रही थीं।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अपना हाथ बुलंद करके सबको अस्सलामो अलैकुम कहा और दुआ करवाई और 8 बजकर 25 मिनट पर यहां से रवानगी हुई। लगभग एक घंटा पाँच मिनट के सफ़र के बाद साढ़े नौ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की मस्जिद बैयतुर्रहमान लाए और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह तशरीफ़ ले गए।

मेहमानों के ईमान वर्धक विचार

आज के आयोजन में शामिल मेहमानों पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के ख़िताब ने गहरा प्रभाव छोड़ा और मेहमानों ने स्पष्ट रूप से अपनी भावनाओं को प्रकट किया। कुछ मेहमानों के विचारों नीचे दर्ज किए जा रहे हैं।

* तारिक़ ख़लील साहिब जो कि एक बैंक में काम करते हैं और ग़ैर अहमदी मुसलमान हैं, उन्होंने अपने विचार बयान करते हुए कहा: जमाअत अहमदिया के लोगों बहुत अक़लमंद हैं और उनका अपनी जमाअत के साथ गहरा सम्बन्ध है और दूसरे मुसलमानों के लिए नमूना हैं। मैं मुसलमान हूँ लेकिन मैं मज़हबी नहीं हूँ, मैंने अहमदिया जमाअत के कई interfaith का interfaith में शिरकत की है और मुझे पता लगा है कि जमाअत अहमदिया एक अच्छा नमूना पेश कर रही है। आपको इस बात पर बहुत गर्व करना चाहिए।

उन्होंने कहा: मैंने आपके ख़लीफ़ा के ख़िताब का हर शब्द सुना है , और लहजा को बहुत ग़ौर से देखा है , उन्होंने अपने ख़िताब में इस्लाम का बहुत अच्छा दिफ़ा किया है और यह सिर्फ़ अहमदी लोगों के लिए नहीं बल्कि सारी मुसलमानों के लिए एक नसीहत थी कि हमें अपनी ज़िन्दगियों को देखना चाहिए ।

*डाक्टर वारिस हुसैन साहिब जोकि इंटरनेशनल फ्रीडम यू.ऐस में पालिसी कमिशनर हैं, उन्होंने अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहा: मुझे पहले भी हुज़ूर अनवर की तक़रीरें सुनने का अवसर मिला है। हमेशा प्यार और अमन की तरफ़ दावत देते हैं और आजकल के हालात में हुज़ूर अनवर का यह पैग़ाम निहायत ही ज़रूरी है । यह पैग़ाम सिर्फ़ अहमदियों के लिए नहीं बल्कि हम सब के लिए है। यह आयोजन बहुत ही शानदार आयोजन है। कई लोग रज़ाकाराना तौर पर सेवा कर रहे हैं और मुहब्बत प्यार के साथ हम से पेश आरहे हैं। यही वह चीज़ है जिससे कम्यूनिटी को ताकत मिलती है।अमरीका में जमाअत अहमदिया इन्सानियत के लिए बहुत सेवा कर रही है, Food banks खोल रही है , ग़रीबों की मदद कर रही है। अगर इस किस्म के लोग वर्जीनिया में मौजूद हैं तो इस से ज़्यादा बड़ी ख़ुशी क्या होगी ।

*एक दोस्त Corrie Stuart जो कि यू. ऐस रिपब्लिकन स्टेट के उम्मीदवार हैं उन्होंने अपने विचार बयान करते हुए कहा: ख़लीफतुल मसीह का ख़िताब बहुत दिलकश और हिक्मत से भरा था। अमरीका को और सारी दुनिया को मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं का पैग़ाम ग़ौर से सुनना चाहिए और इस पर अनुकरण करना चाहिए खासतौर पर जब दुनिया के हालात अच्छे नहीं हैं। यह निहायत ज़रूरी है कि मज़हबी आज़ादी का प्रचार करें । इसलिए यह मस्जिद हमारे लिए गर्व का कारण है क्योंकि आप लोग देश के लिए बहुत कुछ करते हैं ।

*एक मेहमान Roberta Auster साहिबा जो कि वर्जीनिया की डायरेक्टर आफ़ कम्यूनीकेशन हैं, उन्होंने अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहा: मैं ख़लीफ़ा की बातें सुनकर बहुत प्रभावित हुई हूँ। मुझे बहुत अच्छा लगा कि एक ऐसा रुहानी शख़्स हमारे अंदर मौजूद है जो हमें बता रहा है कि आपस में मुहब्बत, प्यार और भाईचारा से रहना चाहिए।

*एक और मेहमान औरत Genine Loss साहिबा कहती हैं :मुझे ख़ुशी है कि हुज़ूर बार-बार मज़हबी आज़ादी के बारे में बात कर रहे थे। दुनिया के इन हालात के सम्मुख हुज़ूर का ख़िताब बहुत ज़रूरी है। यह आयोजन भी बहुत अच्छी थी, सारे मुहब्बत से पेश आ रहे थे ।

*एक मेहमान Matt Waters जो कि वर्जीनिया के state candidate हैं , वह कहते हैं :मैं हुज़ूर का ख़िताब सुनकर बहुत प्रभावित हुआ मैं अब उनके बारे में और अधिक पढ़ूँगा और इंटरनैट से भी मालूमात लूँगा। इसी तरह में और अधिक इस्लाम सीखने के लिए आप की मस्जिद में भी आना चाहता हूँ ।

*एक ईसाई मेहमान Dersh Johnathon ने अपने विचार बयान करते हुए कहा: हुज़ूर अनवर का ख़िताब दुनिया के मौजूदा हालात के ठीक अनुसार था और बहुत ज़रूरी था। हमने अमन का पैग़ाम सुना। मैं बहुत ही प्रभावित था और हैरान था कि हुज़ूर ने पूरी तक़रीर के दौरान सिर्फ़ अमन और सलामती के बारे में ही बात की।

*एक मेहमान Ann Little कहती हैं: ख़लीफतुल मसीह का ख़िताब बहुत उच्च था। यह ख़िताब सुन कर मेरी आँखें भर आएं। इस पैग़ाम की दुनिया को बहुत ज़रूरत है ।

*एक मेहमान Alison Saddelway साहिबा जो पेशा के लिहाज़ से टीचर हैं वो कहती हैं : जब हुज़ूर ने दुनिया में मुहब्बत और इज़्ज़त फैलाने की बात की तो मुझे बहुत अच्छा लगा क्योंकि मैं भी स्कूल में बच्चों को यही सिखाती हूँ।

*एक मेहमान Jeromy Nickpike जो वर्जीनिया शहर के सैनेटर हैं वह कहते हैं:मैंने आज एक चीज़ सीखी है और वह यह है कि मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं। इसी शिक्षा से हम अच्छे पड़ोसी बनाते हैं, विभिन्न कम्यूनिटीज़ बनाते हैं और बच्चों को स्कूलों में शिक्षा देते हैं ।

*एक मेहमान Todd keggy साहिब जो हुकूमत अमरीका के लिए काम करते हैं और उन की पत्नी टीचर हैं वह भी इस में शामिल हुईं। उनकी पत्नी Nancy कहती हैं :हुज़ूर का पैग़ाम निहायत ज़रूरी था ना सिर्फ उस जगह के लिए बल्कि मौजूदा हालात में सारी दुनिया के लिए बहुत ज़रूरी है। मुझे इस पैग़ाम से बहुत उम्मीद और क़ुव्वत मिली है ।

*एक मेहमान Emile Reagalman अपनी बेटी Jenifer के साथ आयोजन में शामिल हुईं वह कहती हैं :इस दुनिया में सबसे ज़्यादा respect की

ज़रूरत है , चाहे कोई मुस्लिम हो या यहूदी या हिंदू सब का फ़र्ज़ है कि एक दूसरे से इज़्ज़त से पेश आए। कुछ तथाकथित मुसलमानों के कामों की वजह से पिछले कुछ सालों से इस्लाम का नाम ख़राब होता जा रहा है। मेरा एक गहरा दोस्त अहमदी है और जब में इस की तरफ़ , और इस की फ़ैमली की तरफ़ देखती हूँ तो मैं सिर्फ मुहब्बत और इज़्ज़त महसूस करती हूँ ।

*एक और मेहमान EMILY Churchill साहिबा जो कि न्यूज़ फ़ाऊंडेशन में काम करती हैं उन्होंने कहा: इस आयोजन से मैंने मुहब्बत और बर्दाश्त के बारे में बहुत कुछ सीखा और मौजूदा हालात के परिपेक्ष्य में इस देश के लिए यह पैग़ाम बहुत ज़रूरी है। मुझे बड़ी ख़ुशी महसूस हो रही है कि इलाक़ा में इस बारे में अब तरक़्क़ी हो रही है।

*एक औरत Lorraine Eckahard अपने विचार का प्रकट करते हुए कहती हैं:मैं तीस साल से इस इलाक़ा में हूँ और यहां के बदलते हालात देखे हैं। हालिया फायरिंग की घटनाएं बहुत अफ़सोस वाली हैं। ऐसे अवसर पर इस महान व्यक्तित्व की तरफ से प्यार, मुहब्बत और रवादारी का पैग़ाम बहुत ही शानदार था। मुझे बहुत ख़ुशी है कि मुझे भी यहां बुलाया गया है। मुझे यहां आकर अहमदिया मुस्लिम जमाअत के बारे में बहुत कुछ जानने का अवसर मिला है। मस्जिद इस इलाक़ा में एक ख़ूबसूरत वृद्धि है, इस से मुझे कोई ख़तरा नहीं है, यह अमन वाली जगह है। मैं मुसलमान नहीं हूँ और मैं इस मस्जिद में आई हूँ, मुझे यहां ख़ुश आमदीद कहा गया है। यही हमारे समाज की ज़रूरत है। मैं कहना चाहती हूँ कि अब आपके यहां और अधिक प्रोग्राम भी होंगे, इन प्रोग्रामों में भी मुसलमानों के अतिरिक्त अन्य धर्मों से सम्बन्ध रखने वाले लोगों को भी बुलाया करें।

*एक यहूदी और एक ईसाई औरत Jane Pickren और Judy Lawrence अपने विचार का प्रकट करते हुए कहती हैं:यह एक शानदार प्रोग्राम था। मुहब्बत ही मुहब्बत का प्रकट था। ख़लीफतुल मसीह ने दस से अधिक बार मुहब्बत का शब्द प्रयोग किया। यह बहुत ही शानदार पैग़ाम था। मुझे एक लीफ़ लेट भी दिया गया था, मैंने वह भी पढ़ा है। मैंने जो कुछ यहां आकर सीखा है, वह सबको मालूम होना चाहिए। आजकल इस्लाम के बारे में लोगों में बहुत से नकारात्मक विचारों प्रचिलत हैं। हम इस्लाम के इस रुख से बहुत प्रभावित हुए हैं। ख़लीफतुल मसीह बहुत ही उच्च व्यक्तित्व के मालिक हैं। आपने जो यह फ़रमाया है कि हमें अपनी आने वाली नस्लों की फ़िक्र करनी है। इस वाक्य से इस मस्जिद के स्थापना की भी वजह समझ आती है कि आप लोग आने वाली नस्लों की बेहतरी के लिए काम कर रहे हैं। हुज़ूर की तक़रीर में एक उम्मीद थी। मैं यहूदी हूँ और मेरी दोस्त ईसाई है, लेकिन हम यहां आकर बहुत आन्नदित हुए हैं। यह बहुत ही शानदार प्रोग्राम था। मेरा जमाअत अहमदिया से परिचय लाइब्रेरी में हुआ था, जहां में वोटिंग के लिए वालनटीइर करने गई थी। वहां कुछ औरतें मिलीं जो बड़े गर्व से कहती थीं कि हम अहमदी मुसलमान औरत हैं। फिर उन्होंने परिचय करवाया और कुछ मुफ़्त किताबें भी दें और फिर एक फ़ार्म दिया कि क्या मैं चाहती हूँ कि मेरे से दोबारा सम्पर्क किया जाए जोकि मैंने ख़ुशी से साइन किया। और मुझे ख़ुशी है कि मैंने यह साइन किया क्योंकि इसी वजह से मुझे इस प्रोग्राम की दावत आई और इस शानदार पैग़ाम को सुना। दुनिया को इस पैग़ाम की बहुत ज़रूरत है। दुनिया में बहुत नफ़रत है। यह मस्जिद बहुत शानदार है। कम्यूनिटी के लिए यह एक सकारात्मक इज़ाफ़ा है। इस से लोगों को मुसलमानों की महत्व का और अधिक समझ होगी। हम आप लोगों से मिलकर बहुत प्रभावित हुए हैं।यह बहुत ही अच्छी जमाअत है। प्रत्येक बहुत अच्छे तरीक़े से मिला है, बहुत दोस्ताना माहौल है। हमने यहां बहुत अच्छा वक़्त गुज़ारा है।

*एक मेहमान Alex Keiseh कहते हैं कि मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ, मेरे लिए यह इस लिहाज़ से बहुत भावनात्मक हो गया था कि मैं Holocaust Survivor हूँ। हुज़ूर अनवर का पैग़ाम बहुत प्रभावित करने वाला था। आपका एक एक शब्द मेरी रूह तक असर कर रहा था। हुज़ूर अनवर का पैग़ाम इस लिहाज़ से भी बहुत हिक्मत वाला था कि हम नफ़रत से नहीं लड़ सकते। नफ़रत को दूर करने के लिए सिर्फ एक ही राह है और वह यह है कि मुहब्बत स्थापित करने के लिए जिहाद किया जाए। नफ़रत को मुहब्बत से ख़त्म किया जाए। यह मुहब्बत हर मज़हब के मध्य पैदा की जानी चाहिए और ऐसी मुहब्बत की असंख्य उदाहरणें हमारे समाज में मौजूद हैं, जैसा कि आप लोगों का यह प्रोग्राम। लेकिन आजकल जो मीडिया में देखने को मिल रहा है वह एक छोटी सी अक़ल्लीयत है और गुमराह करने वाले तत्व हैं और मीडिया उनको बढ़ा चढ़ा कर पेश कर रहा है। हमें इसकी बजाय आपसी मुहब्बत को फैलाना चाहिए। यही पैग़ाम हुज़ूर अनवर लेकर तशरीफ़ लाए हैं। हमें इस पैग़ाम को और इस्लाम की वास्तविक तस्वीर को दुनिया के सामने पेश करना चाहिए।

*51 वीं डिस्ट्रिक्ट से वर्जीनिया स्टेट delegates की मैंबर Hala Ayala जिन्होंने आयोजन के आरम्भ में सम्बोधन भी पेश किया था उन्होंने अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहा: मैं ख़ुद भी एक मुहाजिर की बेटी हूँ। ख़लीफतुल मसीह (अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़) के शब्द एक मर्हम थे विशेष रूप से इस वक़्त जबकि हमें उम्मीद की तलाश है। हमें इस वक़्त वहदानीयत की ज़रूरत है। इस बात की ज़रूरत है कि लोग इस देश की भलाई के लिए एक हो जाएं और मेरे ख़्याल में हुज़ूर अनवर का ख़िताब हमारे देशी हालात के सम्मुख बहुत उचित था।

मैं यहां उद्घाटन से पहले भी आई हुई हूँ लेकिन हुज़ूर अनवर की आने से एक ग़ैरमामूली रुहानी फ़र्क़ महसूस कर रही हूँ। बहुत ही सुकून वाला माहौल है। हुज़ूर अनवर का पैग़ाम बहुत ही हैरत करने वाला था, ख़ासकर यू एस ए के वर्तमान अवस्था में यह बहुत शानदार था। आपका पैग़ाम मुहब्बत का था, एकता का था। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया है कि दूसरों को अपने पर मुक़द्दम समझो। बेनफ़्स हो कर सेवा करो। आजकल के सयासी माहौल में हमें ऐसे ही पैग़ाम की ज़रूरत है। दूसरों को अपने पर फ़ज़ीलत देना, एक बहुत शानदार और रूहानियत से भरपूर पैग़ाम है। अपने पड़ोसियों का ख़्याल रखना, दूसरों के आराम को अपने आराम पर तर्जीह देना बहुत ही शानदार है। ऐसे अवसरों पर अपने अहंकार को प्राथिमकता दी जाती है। हुज़ूर अनवर का पैग़ाम मुहब्बत और प्यार से भरा था। मुझे बहुत ख़ुशी है कि मेरे ज़िला में यह मस्जिद स्थापित की गई है। मुझे गर्व है कि इस मस्जिद के स्थापना में मेरी कोशिश भी शामिल है। जैसा कि हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हमें समाज में एकता पैदा करना है और यह किसी एक ग्रुप की कोशिश से नहीं हो सकता, प्रत्येक को इस में अपना अपना हिस्सा डालना होगा।

*एक मेहमान अपने विचार का प्रकट करते हुए कहते हैं कि; हमें इस पैग़ाम की बहुत ज़रूरत है। मुहब्बत सब के लिए, नफ़रत किसी से नहीं मेरे ख़्याल में इस पैग़ाम का कोई मुतबादिल नहीं। यहां की मेहमान-नवाज़ी से में बहुत प्रभावित हुआ हूँ। जितने आच्छे आचरण और गर्मजोशी से स्वागत किया गया है, वह भी प्रभावित करने वाला था।

*अर्जुन सिंह गिल साहिब जिन्होंने तीस साल से अधिक समय इंडियन एयर फ़ोर्स में काम किया है और तीन साल के लिए वाशिंगटन डी सी में इंडियन हाई कमीशन में डिप्लोमैट के तौर पर काम कर चुके हैं अपने भावनाओं का इस तरह प्रकट करते हैं कि: मेरे लिए यह बहुत बड़े सम्मान और गर्व की बात है कि मुझे आज की इस मज्लिस में शरीक होने का अवसर मिला। वक़्त के ख़लीफ़ा का आज का ख़िताब बहुत प्रभावित करने वाला और अमन की शिक्षा पर आधारित था ।

*सुरजीत सिंह सिद्धू साहिब जो सिख फ़ाउंडेशन वर्जीनिया के चेयरमैन हैं कहते हैं: मेरा सम्बन्ध चूँकि पंजाब से है मैं पहले से ही अहमदिया जमाअत से मुतआरिफ़ था और मैं यह भी जानता हूँ कि जमाअत अहमदिया में एक बहुत पढ़ा लिखा वर्ग पाया जाता है। जमाअत अहमदिया इन्सानियत की सेवा के लिए व्यापक स्तर पर दुनिया-भर के देशों में अपनी ख़िदमतें दे रही है और इन ख़िदमतों को पूरी दुनिया में सराहा भी जाता है। हुज़ूर अनवर का आज का ख़िताब भी बहुत मआरिफ़ वाला था और हम दिल की गहराईयों से इस मस्जिद की बुनियाद पर जमाअत अहमदिया को मुबारकबाद पेश करते हैं, इस आशा के साथ कि भविष्य में भी यहां विश्व व्यापि धर्मों, कान्फ्रैंसज़ और डायलॉग का आयोजन किया जाएगा।

*एक मेहमान Leos Staten साहिब जो न्यू जर्सी में Chiropractor हैं, उन्होंने अपने विचार का प्रकट करते हुए कहा: चूँकि पहले से ही मेरा मुसलमानों में उठना बैठना था,इसलिए मैं इस्लामी शिक्षाओं से वाक़िफ़ था। इस लिहाज़ से मैं मीडिया में पेश होने वाले इस्लाम के बारे में वाक़िफ़ था। लेकिन मुझे जिस बात की बहुत ख़ुशी है वे यह है कि हुज़ूर अनवर ने वक़्त निकाला और हम सबको दावत दी और हम पर इस्लाम की सच्ची और ख़ूबसूरत शिक्षाएं स्पष्ट कीं।

*एक औरत Shineen Madarazu जोनीव जर्सी में surgical coordinator हैं , उन्होंने वर्णन किया: आज के ख़िताब में हमें इस्लाम की ख़ूबसूरत शिक्षाओं के बारे में दोबारा बताया गया। मेरा भी यही नज़रिया है कि कुछ

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,

JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 4 Thursday 21 November 2019 Issue No. 47

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

लोगों की बुरी हरकतों की वजह से पूरे मज़हब को मुल्ज़िम ठहराना अपनी ज़ात में ज़ुल्म से कम नहीं। हमारे यहां अमरीका में हर-रोज़ कोई ना कोई घटनाएं और वाक़ियात होती रहती हैं, मगर इस के लिए एक पूरे मज़हब को क़सूर वार ठहराना ग़लत है।

*एक मेहमान Sandra Wilson साहिबा जो County Government में काम करती हैं अपने भावनाओं का इस तरह प्रकट करती हैं कि: मुहब्बत सब के लिए और नफ़रत किसी से नहीं का सच्चा नज़ारा आपकी जमाअत पेश करती है और आज के ख़िताब के बाद मैं कह सकती हूँ कि ख़लीफतुल मसीह रंग तथा नस्ल के भेदभाव के सिर्फ और सिर्फ अमन चाहते हैं । हम सब एक हैं और दुनिया-भर के सारी समस्याएं को एक तरफ़ रखते हुए हम आज सब भाईचारा का मुज़ाहरा करते हुए एकता की फ़िज़ा स्थापित करने के लिए इकट्ठे हुए हैं।

*एक मेहमान डाक्टर हुमैरा अली साहिबा जो Prince William County मैं फ्री क्लीनिक की मैडीकल डायरेक्टर हैं अपने विचारों को इस तरह प्रकट करती हैं: मैं आज के आयोजन से बहुत प्रभावित हुई हूँ। हर कोई खुले दिल से हमारा स्वागत कर रहा था और ख़िताब में हुज़ूर अनवर ने इस मज्लिस में शामिल होने वाले हर फ़र्द को दावत दी कि हम सबको मिलकर कोशिश करनी होगी कि अमन तथा शान्ति, इन्साफ़ और बराबरी के लिए अपने क़दम आगे बढ़ाए और अपनी आने वाली नस्लों के लिए एक अच्छा उदाहरण छोड़ें। ख़िताब के दौरान ऐसा लग रहा था कि मानो हुज़ूर सिर्फ मुझ से सम्बोधित हैं और मुझे मेरी ज़िम्मेदारियों का एहसास दिला रहे हैं।

*एक मेहमान Ruthy Anderson साहिबा जो कि Prince William County के लिए काम करती हैं अपने विचार को इस तरह प्रकट करती हैं: मुझे जमाअत के बारे में कुछ साल पहले एक अहमदी औरत के द्वारा परिचय प्राप्त हुआ। इस अहमदी औरत ने बतौर अहमदी विभिन्न कम्यूनिटीज़ में अपनी ख़िदमते पेश कीं और जमाअत के बारे में बताया कि वे किन सामाजिक कामों में ख़िदमतें कर रहे हैं। फिर आज यहां आने की दावत दी गई। मेरे लिए एक बहुत बड़े सम्मान की बात है। क्योंकि मुझे हुज़ूर अनवर के साथ एक छोटे ग्रुप में गुफ़्तगु करने का अवसर मिला। चूँकि मेरे पहले से ही जमाअत अहमदिया से सम्बन्ध रखने वाले कुछ दोस्त हैं इसलिए मैं आप लोगों की शिक्षाओं से किसी हद तक आगाह थी और काफ़ी मालूमात इंटरनैट पर भी प्राप्त कर चुकी थी। इस लिहाज़ से में बहुत ख़ुश-क़िस्मत हूँ कि मुझे यहां ख़िताब सुनने के लिए बुलाया गया। हुज़ूर अनवर के ख़िताब में जो अमन और पड़ोसियों के हुक़ूक़ पर बात हुई जो हक़ीक़त पर आधारित है। मैं ख़ुद चाहती हूँ कि हर जगह अमन स्थापित हो।

*एक और मेहमान Berry Bernard साहिब जो पुलिस डिपार्टमैंट में पिछले 40 साल से काम कर रहे हैं वह कहते हैं: मैं सबको इस मस्जिद की मुबारकबाद देता हूँ। मेरे लिए बहुत बड़े सम्मान की बात है कि मुझे आज के आयोजन में शामिल होने का अवसर मिला। इसी तरह कहते हैं कि मैं समझता हूँ कि हुज़ूर अनवर के आज के ख़िताब में पूरी दुनिया के लिए पैग़ाम था। इस में अमन तथा शांति , प्यार , मुहब्बत और हुक़ूक़ के बारे में ज़रूरत के अनुसार नसीहतें की गईं। हमारे यहां विभिन्न रंग तथा नस्ल के 4 लाख 60 हज़ार लोग बस्ते हैं। और आज के पैग़ाम में सबसे अहम बात पड़ोसी के हुक़ूक़ के बारे में थी।

*एक मेहमान Reverend Charlotte Raymond साहिबा कहती हैं: यह जान कर मुझे बहुत ख़ुशी हुई कि मुसलमानों में ऐसे भी हैं जो प्यार और मुहब्बत के पैग़ामों को फैलाते हैं।

*एक मेहमान Dr. Lisa Stuart साहिबा कहती हैं कि:यहां आने से पहले मुझे इस्लाम के बारे में जिज्ञासा थी और यहां आकर देखा कि इस जमाअत में मुहब्बत कूट कूट कर भरी है। और ख़लीफ़ा वक़्त के लिए जो सम्मान और प्यार है वह हैरान करने वाली है।

*एक औरत मेहमान Dr. Kimberly Norman Orosco जो Criminologist और लेखिका हैं और उन्होंने पी एच डी की हुई है, यह अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहती हैं: हुज़ूर अनवर के आज के ख़िताब में अमन और इन्साफ़ के बारे में बहुत गहरे पैग़ाम सुनने को मिले और रंग तथा नस्ल में भेदभाव के बिना प्रत्येक को इस पैग़ाम के अनुसार एकता की फ़िज़ा स्थापित करनी होगी। आज के ख़िताब में हुज़ूर अनवर ने इस्लाम की वास्तविक शक्ल सामने लाकर रखी और इस का ख़ुलासा अमन तथा इन्साफ़ और बराबरी का माहौल पैदा करना है। अपने विचारों को प्रकट करते हुए महोदया कुछ भावनात्मक हो गई थीं और आँसुओं में भर कर कह रही थीं कि आजकल जो लोग ज़ुलम तथा अत्याचार के मुज़ाहिरे दिखा रहे हैं और मज़हब के नाम पर हमारी कमियोनीटीज़ और देश में फ़सादों को फैला रहे हैं , उनका मज़हब से कोई सम्बन्ध नहीं। और यह जानना हर इन्सान के लिए बहुत ज़रूरी है।

*एक मेहमान Martin Nohe साहिब कहते हैं: मेरी तैनाती काऊंटी के इसी हिस्सा में है जहां यह मस्जिद बुनियाद की गई है। आज हुज़ूर ने अमरीका में ठीक ज़रूरत के अनुसार प्यार, मुहब्बत, प्रेम और भाईचारा का पैग़ाम दिया जिसने हम सब पर बहुत गहरा असर छोड़ा है। इस मस्जिद की बुनियाद के साथ एक नई इबादत-गाह का इज़ाफ़ा हुआ जहां हम सब अमन और सलामती की तलाश में प्रत्येक समय आ सकते हैं।

*एक मेहमान Tony Maxi साहिबा जो Development Director हैं अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहती हैं कि: मुझे आज पता लगा है कि जमाअत मुतअद्दिद हस्पताल, स्कूल्ज़ और ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट के अन्तर्गत इतने व्यापक पैमाना में बिना बदला लिए काम कर रही है।

*डाक्टर कटरीनहलनटोस स्वीट जो कि टॉम लीनटोस फ़ाउंडेशन फ़ार हियूमन राईट्स ऐंड जस्टिस की प्रैज़ीडैंट हैं उनकी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाक़ात हुई। वह इस से पहले कैपिटल हिल और लंदन में आयोजित कान्फ्रैंस आफ़ वर्ल्ड रीलीजनज़ में शामिल हो चुकी हैं। वह विशेष तौर पर अपने शेड्यूल में तबदीली करके हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का शरफ़ प्राप्त करने के लिए New Hampshire से तशरीफ़ लाईं। महोदया ने अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहा: ख़लीफतुल मसीह अमरीका के लिए एक रुहानी मर्हम हैं और अमरीका को इस वक़्त आपकी रहनुमाई और नेतृत्व की इंतिहाई ज़रूरत है। अहमदियों पर होने वाले अत्याचारों के बारे में ख़लीफ़तुल मसीह बेशक हिम्मत और सब्र का उच्च नमूना हैं।

महोदया ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ को मस्जिद के उद्घाटन पर मुबारकबाद पेश की और बताया कि ख़लीफ़तुल मसीह ने यू ऐस एंबेसडर और अन्य कांग्रेस के मेम्बरों से जिस तरह मज़हबी आज़ादी के बारे में से बात की , इस से उन्हें बहुत ख़ुशी प्राप्त हुई।

*अमरीका में मौजूद गेम्बिया के एंबेसडर Dawda N. Ferdera साहिब ने अपने विचार का प्रकट करते हुए कहा: जमाअत अहमदिया उम्मत मुहम्मदिया का बहुत अहम बाग है और दुनिया में मौजूद नेकी का एक अहम स्तम्भ है। गेम्बिया में जमाअत अहमदिया आम लोगों के लिए बहुत कुछ कर रही है। हम खेती, सेहत और शिक्षा जैसे अहम विभागों में जमाअत अहमदिया के साथ मिल कर काम कर रहे हैं। गेम्बिया में जमहूरीयत नई नई आई है और वहां प्रत्येक को मज़हबी आज़ादी प्राप्त है। हम जमाअत अहमदिया के साथ मिलकर वहां इन्सानियत की सेवा कर रहे हैं। जमाअत अहमदिया का तरीक़ा बहुत सकारात्मक है। वे लोगों के ईमानों को भी मज़बूत करते हैं और अल्लाह तआला का पैग़ाम फैलाते हैं लेकिन इसके साथ साथ वे लोगों की ज़िन्दगियां बचाने के लिए भी काम करते हैं।

महोदय ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के ख़िताब के बारे में से अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहा: हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अपने ख़िताब में जो पैग़ाम दिया वह बहुत ही सीधा और साफ़ सुथरा पैग़ाम था जिसकी उम्मत मुस्लिमा को बहुत ज़रूरत है क्योंकि इस्लाम की गिनती दुनिया के बड़े धर्मों में होती है लेकिन इसके बारे में बहुत सी ग़लत-फ़हमियाँ पाई जाती हैं। शिद्दत पसंदी और उग्रवाद का इस्लाम में कोई स्थान नहीं है। हुज़ूर अनवर ने बड़ी वज़ाहत के साथ बयान फ़रमाया कि इस्लाम तो अमन का मज़हब है और हम सबको मिलकर इन्सानियत की भलाई की लिए काम करना चाहिए।

(शेष.....)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad